गंगाचिल्ली

चार अंकों का सुखांत नाटक

पात्र

अर्कादिना (**त्रेप्लेवा**), **इरीना निकोलायेव्ना** – अभिनेत्री
त्रेप्लेव, कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच – इरीना का नौजवान बेटा
सोरिन, प्योत्र निकोलायेविच – इरीना का भाई
ज़ारेच्नाया, नीना मिख़ाइलोव्ना – एक अमीर ज़मींदार की बेटी
शाम्रायेव, इल्या अफ़ानास्येविच – अवकाशप्राप्त लेफ़्टिनेंट, सोरिन का कारिन्दा
पोलीना अन्द्रेयेव्ना – कारिन्दे की बीवी
माशा – कारिन्दे की बेटी
त्रिगोरिन, बोरीस अलेक्सेयेविच – लेखक
दोर्न, येव्गेनी सेर्गेयेविच – डाक्टर
मेद्वेदेन्को, सेम्योन सेम्योनोविच – अध्यापक
याकोव – मज़दूर
बावर्ची
नौकरानी

(घटना-स्थल – बाग़ सहित सोरिन का घर। तीसरे और चौथे अंक के बीच दो वर्ष का अन्तर)

पहला अंक

(सोरिन की जागीर में पार्क का एक भाग। ऐक चौड़ी वीथिका जो दर्शकों की ओर से पार्क में दूर तक झील की तरफ़ गयी है। वीथिका और झील के बीच शौक़िया नाटक खेलने के लिये काम चलाऊ स्टेज बनाया गया है जिससे झील बिल्कुल नज़र नहीं आती। स्टेज के दायें-बायें झाड़ियां हैं। कुछ कुर्सियां और एक छोटी-सी मेज़ है।

थोड़ी ही देर पहले सूरज छिपा है। स्टेज का परदा गिरा हुआ है और याकोव तथा दूसरे मज़दूर वहां काम कर रहे हैं। खांसी और ठक-ठक की आवाज़ सुनाई दे रही है। माशा और मेद्वेदेन्को सैर करके बायीं ओर से लौटते हैं।)

मेद्वेदेन्को : आप हमेशा काले कपड़े क्यों पहने रहती हैं?

माशा : अपनी ज़िन्दगी का मातम मनाने के लिये। बदक़िस्मत जो हूं मैं।

मेद्वेदेन्को : भला क्यों? (**सोच में डूबते हुए**) कुछ समझ में नहीं आता... आप तन्दरुस्त हैं, आपके पिता अमीर न सही, मगर खाते-पीते आदमी हैं। आपकी तुलना में मेरी ज़िन्दगी कहीं मुश्किल है। मुझे महीने में सिर्फ़ तेईस रूबल मिलते हैं और उनमें से भी कुछ कटौती हो जाती है। इसके बावजूद में मातमी पोशाक नहीं पहनता हूं। (**दोनों बैठ जाते हैं**)

माशा : सवाल पैसे का नहीं है। ग़रीब आदमी भी सुखी हो सकता है।

मेद्वेदेन्को : कहने को ऐसा कहा जा सकता है, मगर अमली तौर पर तस्वीर यह बनती है – मैं, मेरी मां, दो बहनें और छोटा भाई – और वेतन ले-देकर तेईस रूबल। खाने-पीने को

चाहिये? चाय-चीनी चाहिये? सिगरेट-तम्बाकू चाहिये? बस, खींच-तानकर काम चलाइये।

माशा (**स्टेज की ओर नज़र डालकर**): खेल जल्दी ही शुरू हो जायेगा।

मेद्वेदेन्को: हां। अभिनय करेगी ज़ारेच्नाया और नाटक लिखा है कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच ने। वे एक-दूसरे के प्रेम-दीवाने हैं और आज एक ही कलात्मक बिम्ब प्रस्तुत करने के प्रयास में उनकी आत्मायें मिलकर एकाकार हो जायेंगी। किन्तु मेरी और आपकी आत्मा में ऐसा कुछ नहीं है कि वे एकाकार हो सकें। मैं आपको प्यार करता हूं, बेचैनी के कारण घर पर बैठा नहीं रह सकता, हर दिन कोई चार मील पैदल चलकर यहां आता हूं और चार मील वापस जाता हूं, लेकिन आपसे उपेक्षा के सिवा कुछ नहीं मिलता। यह समझ पाना कठिन नहीं। मैं सम्पन्न नहीं हूं, मुझ पर बड़े परिवार का बोझ है... जिसके यहां रोटी के भी लाले हैं, उस आदमी से भला कौन शादी करना चाहेगा?

माशा: ये बेकार की बातें हैं। (**नसवार सूंघती है**) आपका प्यार मेरे दिल को छूता है, मगर मैं आपको प्यार नहीं कर सकती, बस। (**नासदानी उसकी तरफ़ बढ़ाती है**) लीजिये।

मेद्वेदेन्को: मन नहीं चाहता।

(**ख़ामोशी**)

माशा: बड़ी उमस है। रात को शायद आंधी-पानी आयेगा। आप या तो फ़लसफ़ा बघारते हैं या पैसों का रोना रोते हैं। आपके ख़्याल में ग़रीबी से बढ़कर कोई मुसीबत नहीं, लेकिन शायद चिथड़ों में घूमना और भीख मांगना इससे कहीं बेहतर है कि... ख़ैर, यह बात आपकी समझ में नहीं आयेगी...

(**दायीं ओर से सोरिन और त्रेप्लेव आते हैं**)

सोरिन (छड़ी का सहारा लेकर): भैया मेरे, गांव में मुझे कुछ अजीब-अजीब-सा लगता है और सीधी-सी बात है कि मैं यहां का कभी आदी नहीं हो पाऊंगा। पिछली रात दस बजे सो गया और आज सुबह यह अनुभव करते हुए नौ बजे जागा मानो इतनी देर तक सोते रहने से मेरा दिमाग़ खोपड़ी से चिपक गया है या फ़िर कुछ ऐसा ही हुआ है। **(हंसता है)** दोपहर के भोजन के बाद फिर अचानक मेरी आंख लग गयी और अब बिल्कुल टूटा-टूटा-सा महसूस कर रहा हूं, बड़ी बुरी हालत है। आख़िर ...

त्रेप्लेव: हां, आपको तो शहर में ही रहना चाहिये। (**माशा और मेद्वेदेन्को को देखता है**) महानुभावो, खेल शुरू होने के वक़्त आपको बुलवा लेंगे, लेकिन अभी आपका यहां होना ठीक नहीं। कृपया, चले जाइये।

सोरिन (माशा से): मारीया इल्यीनिच्ना, मेहरबानी करके अपने बापू से कुत्ते की ज़ंजीर खुलवा देने को कह दीजिये। वह हूंक रहा है। मेरी बहन फिर सारी रात नहीं सो सकी।

माशा: ख़ुद ही कह दीजिये बापू से। मैं नहीं कहूंगी। माफ़ी चाहती हूं। (**मेद्वेदेन्को से**) आइये, चलें।

मेद्वेदेन्को (त्रेप्लेव से): तो आप खेल शुरू होने के पहले हमें सूचना भिजवा दीजिये। (**दोनों जाते हैं**)

सोरिन: तो यह कुत्ता फिर सारी रात रोता-हूंकता रहेगा। ख़ूब क़िस्सा है यह भी। मैं गांव में कभी भी वैसे नहीं रह पाया, जैसे मैंने रहना चाहा। कई बार ऐसे हुआ कि महीने भर की छुट्टी लेकर मैं इस ख़्याल से यहां आया कि कुछ आराम करूंगा, थोड़ा चैन मिलेगा, लेकिन यहां सभी तरह की उलटी-सीधी बातों से ऐसे नाक में दम आ जाता था कि पहले ही दिन वापस

भाग जाने को मन होने लगता। (**हंसता है**) बहुत ही ख़ुशी से मैं हमेशा यहां से वापस जाता था... लेकिन अब तो पेंशनर हो गया, जाऊं भी तो कहां। चाहूं या न चाहूं, यहीं रहना होगा...

याकोव (त्रेप्लेव से): कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच, हम मज़दूर लोग नहाने-धोने जा रहे हैं।

त्रेप्लेव: अच्छी बात है, मगर दस मिनट में वापस आ जाना। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) खेल जल्द ही शुरू हो जायेगा।

याकोव: ठीक है। (**जाता है**)

त्रेप्लेव (स्टेज पर नज़र दौड़ाकर): लो बन गया थियेटर! परदा, पहला विंग, फिर दूसरा विंग और उसके पीछे खुली जगह। किसी तरह की कोई मंच-सज्जा नहीं। झील और क्षितिज ही सामने उभरते हैं। चांद निकलते ही हम ठीक साढ़े आठ बजे परदा उठा देंगे।

सोरिन: बहुत खूब।

त्रेप्लेव: अगर नीना ने आने में देर कर दी तो सारा मज़ा किरकिरा हो जायेगा। अब तक तो उसे आ जाना चाहिये था। उसका बाप और सौतेली मां उस पर बहुत कड़ी नज़र रखते हैं। उसके लिये घर से बाहर आना जेल से निकल भागने के समान कठिन है। (**मामा की टाई ठीक करता है**)। आपकी दाढ़ी और सिर के बाल बहुत बढ़ गये हैं। शायद इनकी कुछ काट-छांट होनी चाहिये...

सोरिन: (**दाढ़ी को ठीक करते हुए**): मेरी ज़िन्दगी की यह ट्रेजेडी है। जवानी के दिनों में भी मेरी सूरत से ऐसा लगता था मानो मैं कोई पियक्कड़ होऊं। औरतों ने मुझे कभी प्यार नहीं किया। (**बैठते हुए**) तुम्हारी मां आज किसलिये उखड़ी-उखड़ी-सी है?

त्रेप्लेव: किसलिये? इसलिये कि वह ऊब महसूस करती है।

(**बग़ल में बैठते हुए**) उसे जलन हो रही है। वह तो मेरे भी ख़िलाफ़ हो गयी है, इस खेल के ख़िलाफ़ है, मेरे नाटक के ख़िलाफ़ है, क्योंकि उसमें वह नहीं, नीना अभिनय कर रही है। वह मेरे नाटक से परिचित तक नहीं, लेकिन उससे नफ़रत करती है।

सोरिन (**हंसता है**): यह सब तुम्हारी मनगढ़न्त है, सच ...

त्रेप्लेव: उसे इस बात का दुख हो रहा है कि इस छोटे-से रंगमंच पर उसका नहीं, नीना की जीत का डंका बजेगा। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) मेरी मां एक मनोवैज्ञानिक अजूबा है। इसमें ज़रा भी शक नहीं कि उसमें प्रतिभा है, वह समझदार है, किसी किताब को पढ़ते हुए फूट-फूट कर रो सकती है, नेक्रासोव* का काव्य रट सकती है, फ़रिश्ते की तरह बीमार की सेवा में जुट सकती है। लेकिन उसके सामने किसी दूसरे की तारीफ़ तो कर देखिये! ओ-हो! तारीफ़ कीजिये तो केवल उसकी, लिखिये तो केवल उसके बारे में। 'केमेलिया के साथ महिला' या 'जीवन का धुआं' में उसके अनूठे अभिनय के बारे में हमें ख़ूब शोर मचाना और ख़ुशी से दीवाना होना चाहिये। किन्तु चूंकि यहां गांव में उसे यह नशा नहीं मिलता, इसलिये वह ऊब अनुभव करती है, खीझती-झल्लाती है, हम सब उसके दुश्मन हैं, हम सब कुसूरवार हैं। फिर वह अन्धविश्वासी भी है, तीन मोमबत्तियों और तेरह की संख्या से डरती है। पैसे की पीर है। ओदेस्सा के एक बैंक में उसके सत्तर हज़ार रूबल जमा हैं – मुझे यह अच्छी तरह मालूम है। लेकिन आप उससे क़र्ज़ ही मांग देखिये, वह टसुए बहाने लगेगी।

---

* नेक्रासोव, निकोलाई (१८२१–१८८७) – प्रसिद्ध रूसी कवि और लेखक। – अनु०

सोरिन: तुमने अपने मन से यह बात बना ली है कि तुम्हारा नाटक तुम्हारी मां को पसन्द नहीं और इसीलिये इस तरह बौखला रहे हो। बस, इत्तनी ही बात है। शान्त हो जाओ, तुम्हारी मां तुम्हें बहुत प्यार करती है।

त्रेप्लेव (फूल की पंखुड़ियां तोड़ते हुए): प्यार करती है या नहीं करती है, प्यार करती है या नहीं करती है। (**हंसता है**) देख रहे हैं न, मेरी मां मुझे प्यार नहीं करती। वह कर भी कैसे सकती है! वह जीना, इश्क-मुहब्बत करना, चटक पोशाकें पहनना चाहती है। इधर मैं पच्चीस साल का हो गया हूं और उसे लगातार यह याद दिलाता रहता हूं कि वह अब जवान नहीं रही। जब मैं सामने नहीं होता हूं तो वह सिर्फ़ बत्तीस की होती है और मेरे आते ही तेंतालीस की हो जाती है। इसलिये मैं उसे फूटी आंखों नहीं सुहाता। फिर उसे यह भी मालूम है कि मैं रंगमंच को कोई मान्यता नहीं देता हूं। वह रंगमंच को प्यार करती है, उसे प्रतीत होता है कि वह मानवजाति, पावन कला की सेवा कर रही है, जबकि मेरे मतानुसार आज का रंगमंच घिसी-पिटी बातों और परम्पराओं की लकीरें पीटने से ज़्यादा कुछ नहीं है। जब परदा उठता है और शाम के झुटपुटे की हल्की-हल्की रोशनी तथा तीन दीवारोंवाले कमरे में ये महान प्रतिभाएं, पावन-कला के ये पुजारी हमें दिखाते हैं कि लोग कैसे खाते-पीते हैं, प्यार करते, चलते-फिरते और पहनते-ओढ़ते हैं, जब भोंडे दृश्यों और वाक्यों से बहुत मामूली, सुविधाजनक और घरेलू जीवन के लिये उपयोगी नैतिक निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं, जब हज़ार तरह से घुमा-फिराकर एक ही बात, एक ही बात, एक ही बात को मेरे कानों में ठूंसा जाता है, तो मैं भाग खड़ा होता हूं। वैसे ही भाग खड़ा होता हूं, जैसे मोपासां 'एफ़िल टावर' से दूर भाग गया था,

जिसका घटियापन उसके दिल-दिमाग़ के लिये भारी बोझ बन गया था।

सोरिन: रंगमंच के बिना काम नहीं चल सकता।

त्रेप्लेव: नये रूपों की आवश्यकता है। हां, आवश्यकता है नये रूपों की और अगर वे नहीं हैं तो यही बेहतर है कि कुछ भी न हो। (**घड़ी पर नज़र डालता है**) मैं मां को प्यार करता हूं, बेहद प्यार करता हूं, मगर वह बेतुका जीवन बिता रही है, लगातार इस लेखक के साथ चिपकी रहती है, लगातार अख़बारों में उसके नाम की चर्चा होती रहती है और इस सबसे मुझे बड़ी परेशानी होती है। कभी-कभी मुझ में एक साधारण मानव का आत्माभिमान बोलने लगता है। इस बात का अफ़सोस होने लगता है कि मेरी मां एक प्रसिद्ध अभिनेत्री है और ऐसा अनुभव होता है कि अगर वह साधारण महिला होती तो मैं कहीं अधिक सौभाग्यशाली होता। मामा जी, इससे ज़्यादा हताशापूर्ण और बेहूदा स्थिति क्या हो सकती है – कभी-कभी ऐसा भी हुआ कि मां के दीवानख़ाने में सभी जाने-माने लोग बैठे होते, प्रसिद्ध कलाकार और लेखक। उनके बीच सिर्फ़ एक मैं ही ऐसा होता जो न तीन में न तेरह में। मुझे सिर्फ़ इसलिये बर्दाश्त किया जाता कि मैं उसका बेटा हूं। मैं कौन हूं? क्या हूं? कुछ ऐसी परिस्थितियों के कारण, जिनके बारे में, जैसा कि कहा जाता है, सम्पादक-मण्डल का कोई वश नहीं था, मैंने तीसरे वर्ष में ही विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ दी, प्रतिभा नाम की कोई चीज़ मुझमें नहीं, फूटी कौड़ी मेरे पास नहीं और मेरे पासपोर्ट में यह लिखा है कि मैं मध्यम वर्ग का कीयेववासी हूं। मेरे पिता भी तो मध्यम वर्ग के कीयेववासी थे, यद्यपि वह भी विख्यात अभिनेता थे। हां, तो दीवानख़ाने में बैठे हुए ये कलाकार और लेखक जब अनुकम्पा की दृष्टि से मेरी ओर देखते तो मुझे लगता कि वे

अपनी नज़रों से मेरी तुच्छता को नाप रहे हैं। मैं उनकी भावनाओं का अनुमान लगाता और तिरस्कार के कड़ुवे घूंट पीकर रह जाता...

सोरिन : प्रसंगवश यह तो बताने की कृपा करो कि यह लेखक किस ढब का आदमी है? इसे तो समझा ही नहीं जा सकता। हमेशा चुपचाप रहता है।

त्रेप्लेव : वह समझदार आदमी है, सीधा-सादा, लेकिन कुछ-कुछ उदासी में डूबा रहनेवाला। सलीक़ा जानता है। अभी तो उसके चालीस साल का होने में भी काफ़ी देर है, लेकिन बड़ा नाम पैदा कर चुका है और बहुत कुछ देख-सह चुका है। अब वह सिर्फ़ बीयर पीता है और सिर्फ़ उन औरतों को प्यार करता है जो जवान नहीं... जहां तक उसके कृतित्व का सम्बन्ध है... तो क्या कहा जाये उसके बारे में? अच्छा लिखता है, प्रतिभाशाली है... लेकिन... तोलस्तोय या ज़ोल्या को पढ़ने के बाद त्रिगोरिन को पढ़ने को मन नहीं होता।

सोरिन : भैया, मैं तो लेखकों को बहुत प्यार करता हूं। कभी तो मैं जी-जान से दो बातें चाहता था – शादी करना और लेखक बनना। लेकिन दोनों में से मेरी एक भी मुराद पूरी नहीं हुई। हां, कोई छोटा-मोटा लेखक हो जाना भी बड़ी खुशी की बात है।

त्रेप्लेव (ध्यान से सुनते हुए) : मुझे पांवों की आहट सुनाई दे रही है... **(मामा को बांहों में भर लेता है)** उसके बिना मैं ज़िन्दा ही नहीं रह सकता... उसके पांवों की आहट तक बहुत प्यारी है... मैं बेहद खुश हूं। **(जल्दी से नीना ज़ारेच्नाया की तरफ़ बढ़ता है जो प्रवेश करती है)** मेरी जादूगरनी', मेरी कल्पना...

नीना (घबराहट से) : मुझे देर तो नहीं हो गयी... शायद देर नहीं हुई...

त्रेप्लेव (उसके हाथों को चूमते हुए) : नहीं, नहीं, नहीं...

नीना : मैं दिन भर बहुत परेशान रही, बेहद डरती रही!

मुझे यह चिन्ता सताती रही कि पिता जी मुझे जाने नहीं देंगे... किन्तु अभी-अभी वह मेरी सौतेली मां के साथ कहीं गये हैं। आकाश में लाली थी, चांद निकलनेवाला था और मैं यहां पहुंचने के लिये घोड़े को सरपट दौड़ा रही थी, दौड़ा रही थी। (**हंसती है**) लेकिन मैं ख़ुश हूं। (**सोरिन से बड़े तपाक से हाथ मिलाती है**)

सोरिन (**हंसता है**): आंखों से तो ऐसे लगता है कि रोती रही हो... छिः-छिः! यह अच्छी बात नहीं है।

नीना: हां, ऐसा ही है... देख रहे हैं कि कैसे हॉफ़ रही हूं। आध घण्टे बाद मैं चली जाऊंगी, जल्दी करनी चाहिये। भगवान के लिये मुझे देर नहीं करवाइये। पिता जी को यह मालूम नहीं कि मैं यहां हूं।

त्रेप्लेव: हां सचमुच, खेल शुरू करने का समय हो गया। सबको बुलाना चाहिये।

सोरिन: मैं अभी जाकर सबको बुला लाता हूं। (**दायीं ओर जाता है और गाता है**) "चले फ़्रांस को दो फ़ौजी..." (**इधर-उधर नज़र दौड़ाता है**) एक बार मैं इसी तरह से गाने लगा और सरकारी वकील का एक साथी मुझसे बोला: "हुज़ूर, आपकी आवाज़ बड़ी ज़ोरदार है..." फिर कुछ सोचकर उसने इतना और जोड़ दिया – "मगर... भद्दी।" (**हंसकर चला जाता है**)

नीना: पिता जी और उनकी पत्नी मुझे यहां नहीं आने देते। कहते हैं कि यह कलाकारों की जगह है... उन्हें डर है कि मैं कहीं अभिनेत्री न बन जाऊं... लेकिन इस झील की ओर तो गंगाचिल्ली की तरह मेरा मन खिंचता है... मेरे दिल में तो आप समाये हैं। (**चारों ओर नज़र दौड़ाती है**)

त्रेप्लेव: हम अकेले हैं।

नीना : लगता है कि वहां कोई और भी है...

त्रेप्लेव : कोई नहीं।

(एक-दूसरे को चूमते हैं)

नीना : यह कौन-सा पेड़ है?

त्रेप्लेव : एल्म।

नीना : यह ऐसा काला-काला क्यों है?

त्रेप्लेव : क्योंकि शाम हो गयी है और सभी चीज़ें अंधेरे की चादर में लिपटती जा रही हैं। आपसे अनुरोध करता हूं कि लौट जाने की उतावली नहीं कीजियेगा।

नीना : यह सम्भव नहीं।

त्रेप्लेव : और अगर मैं आपके यहां चलूं, नीना? मैं रात भर बाग़ में खड़ा रहकर आपकी खिड़की को देखता रहूंगा।

नीना : नहीं, ऐसा करना ठीक नहीं होगा, आप पर चौकीदार की नज़र पड़ सकती है। त्रेज़ोर कुत्ता भी आपसे हिला-मिला नहीं है और इसलिये भौंकने लगेगा।

त्रेप्लेव : मैं आपको प्यार करता हूं।

नीना : शी...

त्रेप्लेव (पैरों की आवाज़ सुनकर) : कौन है? याकोव तुम हो?

याकोव : जी।

त्रेप्लेव : स्पिरिट है न? गन्धक भी? जब आंखें लाल-लाल नज़र आयें, उसी समय गन्धक की बू भी आनी चाहिये। **(नीना से)** जाइये, वहां सब कुछ तैयार है। घबराहट महसूस कर रही हैं?

नीना : हां, बहुत ज़्यादा। आपकी अम्मां की तो कोई बात

नहीं, मुझे उनसे डर नहीं लगता, लेकिन आपके यहां त्रिगोरिन भी है... उसके सामने अभिनय करते हुए मेरा दिल कांपता है और मुझे झेंप भी अनुभव होती है... वह प्रसिद्ध लेखक है... क्या जवान है?

त्रेप्लेव: हां।

नीना: कितनी बढ़िया कहानियां लिखता है वह!

त्रेप्लेव (रुखाई से): मुझे मालूम नहीं, मैंने पढ़ीं नहीं।

नीना: आपके नाटक में अभिनय करना कठिन है। उसमें सजीव पात्र नहीं हैं।

त्रेप्लेव: सजीव पात्र! जीवन को वैसे चित्रित नहीं करना चाहिये जैसा वह है, वैसा भी नहीं, जैसा उसे होना चाहिये, बल्कि ऐसा, जैसी हम उसकी कल्पना करते हैं।

नीना: आपके नाटक में घटनायें भी बहुत कम हैं, लम्बे-लम्बे भाषण ही हैं। मेरे ख़्याल में नाटक में प्रेम भी ज़रूर होना चाहिये..."

(दोनों रंगमंच के पीछे चले जाते हैं। पोलीना अन्द्रेयेव्ना और दोर्न आते हैं)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: नमी होती जा रही है। लौटकर अपने गलोश* पहन आइये।

दोर्न: मुझे गर्मी महसूस हो रही है।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: आप अपना ध्यान नहीं रखते। यह आपकी हठधर्मी है। आप डाक्टर हैं और बहुत अच्छी तरह से यह जानते

*चमड़े के जूतों पर पहने जानेवाले रबड़ के जूते जो नमी से बचाते हैं। – अनु०

हैं कि नमी आपके लिये कितनी नुक़सानदेह है। लेकिन आप तो सिर्फ़ मुझे सताना चाहते हैं। कल आप पूरी शाम जान-बूझकर ही छज्जे में बैठ रहे ...

दोर्न (गुनगुनाता है) : "मत कहो जवानी नहीं रही"।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : आप इरीना निकोलायेव्ना से बातें करने में इतने खोये हुए थे ... कि आपको ठण्ड का ध्यान ही नहीं रहा। आप यह तो मान ही लीजिये कि वह आपको बहुत अच्छी लगती है ...

दोर्न : मेरी उम्र पचपन साल है।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : तो क्या हुआ ? पुरुषों के लिये यह बुढ़ापे की उम्र नहीं। अपनी उम्र से आप कहीं जवान लगते हैं और औरतें अभी भी आप पर फ़िदा होती हैं।

दोर्न : तो आप क्या चाहती हैं ?

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : अभिनेत्री के सामने आप सभी नाक रगड़ने को तैयार हैं। सभी !

दोर्न (गुनगुनाता है) : "मैं फिर से हूं तुम्हारे सामने" ... अगर समाज में कलाकारों का आदर-सत्कार होता है और व्यापारियों-सेठों के मुक़ाबले में उनके साथ कहीं अच्छा बर्ताव किया जाता है, तो ऐसा तो होना ही चाहिये। यह आदर्शवाद है।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : औरतें हमेशा आपको प्यार करती रहीं और आपके गले का हार बनी रहीं। क्या यह भी आदर्शवाद है ?

दोर्न (कंधे झटककर) : तो क्या किया जाये ? औरतों के मामले में मैं काफ़ी ख़ुशनसीब रहा। वे मुख्य रूप से तो एक अच्छे डाक्टर के नाते मुझे चाहती थीं। आपको याद होगा, दस-पन्द्रह साल पहले सारे गुबेर्निया में बच्चा जनानेवाला मैं ही ढंग का

डाक्टर था। इसके बावजूद मैं हमेशा एक ईमानदार आदमी रहा।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (उसका हाथ अपने हाथ में लेकर) : मेरे प्रियतम !

दोर्न : धीमे। लोग आ रहे हैं।

(सोरिन की बांह में बांह डाले अर्कादिना, त्रिगोरिन, शाम्रायेव, मेद्वेदेन्को और माशा आते हैं)

शाम्रायेव : १८७३ में पोल्तावा के मेले में इन्होंने क्या ग़ज़ब का अभिनय किया था ! तारीफ़ करते हुए दिल नहीं भरता था ! अद्भुत अभिनय किया था ! कृपया यह तो बताइये कि मज़ाकिया अभिनय करनेवाला पावेल सेम्योनोविच चादिन आजकल कहां है ? रासप्ल्यूयेव की भूमिका में तो वह बेजोड़ था, सादोव्स्की से भी बढ़कर। क़सम खाकर कहता हूं, मेरी बहुत ही माननीया मालकिन। अब वह कहां है ?

अर्कादिना : आप तो हमेशा गौण पात्रों के बारे में ही पूछते रहते हैं। मुझे क्या मालूम ! **(बैठती है)**

शाम्रायेव (आह भरकर) : पाश्का चादिन ! वैसे अभिनेता अब नहीं रहे। रंगमंच का स्तर अब बहुत नीचे चला गया है, इरीना निकोलायेव्ना ! पहले जानदार शाहबलूत होते थे और अब हमें सिर्फ़ ठूंठ ही दिखाई देते हैं।

दोर्न : यह सच है कि उज्ज्वल प्रतिभायें अब बहुत कम हैं, लेकिन आम अभिनेता का स्तर पहले से कहीं अधिक ऊंचा हो गया है।

शाम्रायेव : मैं आपसे सहमत नहीं हो सकता। लेकिन ख़ैर, ख़याल अपना-अपना, पसन्द अपनी-अपनी। पसन्द की या तो तारीफ़ करें या चुप रहें।

(त्रेप्लेव रंगमंच के पीछे से सामने आता है)

अर्कादिना (बेटे से) : मेरे प्यारे बेटे, कब शुरू हो रहा है खेल ?

त्रेप्लेव : अभी, एक मिनट में। ज़रा सब्र से काम लेने का अनुरोध करता हूं।

अर्कादिना ('हेमलेट' की पंक्तियां बोलती है) : "मेरे बेटे ! तूने मेरी नज़रों को मोड़ दिया मेरी आत्मा की ओर, वहां मैंने देखे ख़ून से लथपथ और ऐसे भयानक घाव कि – नहीं हो सकता कोई बचाव !"

त्रेप्लेव ('हेमलेट' से ही) : "और किसलिये तुमने यह पाप किया, अपराध के तल में प्यार पाना चाहा ?"

(रंगमंच के पीछे तुरही बजती है)

महानुभावो, खेल आरम्भ होता है ! कृपया ध्यान दे !

(ख़ामोशी)

मैं शुरू करता हूं। **(छड़ी से ठक-ठक करके ऊंचे-ऊंचे बोलता है)** अरी तुम, रात के समय इस झील के ऊपर मंडरानेवाली प्राचीन, सम्मानित छायाओ ; हमें सुला दो और तब सपने में हमें वह दिखाई दे जो दो लाख साल बाद यहां होगा।

सोरिन : दो लाख साल बाद तो कुछ भी नहीं होगा।

त्रेप्लेव : तो यही "कुछ भी नहीं" हमें दिखाई दे।

अर्कादिना : अच्छी बात है। हम सब सो रहे हैं।

(परदा उठता है ; झील का दृश्य उभरता है, चांद क्षितिज पर है, उसकी छाया पानी में प्रतिबिम्बित हो रही है। सिर से

पांव तक सफ़ेद पोशाक पहने हुए नीना ज़ारेच्नाया एक बड़े-से पत्थर पर बैठी है।)

•

नीना : लोग, बबर, उक़ाब और तीतर, बारहसिंघे, बत्तखें, मकड़े-मकड़ियां, पानी में रहनेवाली मूक मीन, समुद्री तारक मछलियां और आंखों से नज़र न आनेवाले सूक्ष्म जीव-जन्तु – संक्षेप में यह कि सभी प्राणी, सभी जीवधारी, सभी जीवित प्राणी, अपना दुखद जीवन-चक्र पूरा करके लुप्त हो चुके हैं... हज़ारों सालों से धरती पर एक भी जीवित प्राणी नहीं है और यह बेचारा चांद व्यर्थ ही अपना नभ-दीप जलाता रहता है। चरागाह में चीख़कर सारस नहीं जागते हैं और लाइम वृक्षों के कुंजों में मई महीने के गुबरैलों की भनक सुनाई नहीं देती है। शीत, शीत, शीत। शून्य, शून्य, शून्या। भय, भय, भय।

(ख़ामोशी)

जीवधारियों के शरीर धूल-मिट्टी में लुप्त हो गये, शाश्वत मूल तत्त्व ने उन्हें पाषाणों, जल और बादलों में बदल दिया तथा उन सबकी आत्मायें घुल-मिलकर एक हो गयीं। विश्वात्मा – यह मैं हूं... मैं हूं... मुझमें है आत्मा सिकन्दर महान की, सीज़र और शेक्सपीयर की, नेपोलियन और छोटी से छोटी जोंक की। मेरे भीतर लोगों की चेतना जानवरों की मूल-वृत्तियों से एकाकार हो गयी है, मुझे सब, सब, सब कुछ याद है और हर जीवन की मुझे फिर से अनुभूति हो रही है।

(दलदली रोशनियां दिखाई देती हैं)

अर्कादिना : (धीरे से) : यह तो ह्रासोन्मुख जैसा कुछ है।

त्रेप्लेव (अनुरोध और भर्त्सना के अन्दाज़ में) : अम्मां !

नीना : मैं अकेली हूं। सौ साल में एक बार मैं बोलने के लिये अपने होंठ खोलती हूं और इस सुनसान में उदासी से मेरी आवाज़ गूंजती रहती है और कोई उसे नहीं सुनता ... धुंधली-धुंधली रोशनियो, तुम भी तो मुझे नहीं सुनतीं ... मिट्टीवाली दलदल भोर के पहले तुम्हें जन्म देती है और पौ फटने तक तुम व्यर्थ, इच्छाविहीन और जीवन-स्पन्दन के बिना भटकती रहती हो। शाश्वत मूल तत्त्वों का जनक, शैतान, इस चीज़ से डरता हुआ कि कहीं तुममें ज़िन्दगी न आ जाये, पाषाणों और जल की भांति, तुममें भी हर क्षण अणुओं का परिवर्तन करता रहता है और तुममें लगातार तबदीली होती रहती है। ब्रह्माण्ड में केवल आत्मा ही स्थायी और नित्य बनी रहती है।

(**ख़ामोशी**)

गहरे, अंधे कुएं में फेंके गये बन्दी की भांति मैं यह नहीं जानती कि कहां हूं और मेरी नियति क्या है। मुझे केवल इतना मालूम है कि मूल तत्त्वों के स्रोत – शैतान – के साथ अपने कड़े संघर्ष में आख़िर मेरी जीत होगी। इसके बाद जड़ और चेतन घुल-मिलकर एक अद्भुत रूप धारण कर लेंगे और विश्वेच्छा का साम्राज्य आरम्भ होगा। किन्तु यह तो तभी होगा, जब हज़ारों सालों के दौरान बहुत धीरे-धीरे चांद और उज्ज्वल लुब्धक तथा धरती भी धूल बन जायेंगे ... मगर तब तक है त्रास, त्रास ...

(**ख़ामोशी ; झील की पृष्ठभूमि में दो लाल-लाल धब्बे दिखाई देते हैं**)

वह आ रहा है मेरा शक्तिशाली शत्रु – शैतान। मुझे उसकी भयानक ख़ूनी आंखें दिखाई दे रही हैं ...

अर्कादिना : गन्धक की बू आ रही है। क्या ऐसा ही होना चाहिये ?

त्रेप्लेव : हां।

अर्कादिना (हंसती है) : हां, यह मंच-प्रभाव के लिये है।

त्रेप्लेव : अम्मां !

नीना : इन्सान के बिना उसका मन नहीं लगता ...

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (दोर्न से) : आपने टोप उतार लिया है। उसे पहन लीजिये, नहीं तो ठण्ड लग जायेगी।

अर्कादिना : डाक्टर नें शाश्वत मूल तत्त्वों के जनक – शैतान – के सम्मान में टोप उतार लिया है।

त्रेप्लेव (ग़ुस्से से, ऊंची आवाज़ में) : नाटक ख़त्म हो गया ! बस, काफ़ी है ! परदा गिराओ !

अर्कादिना : तुम ऐसे बिगड़ क्यों रहे हो ?

त्रेप्लेव : बस, काफ़ी है ! परदा ! परदा गिराओ ! **(पांव पटकता है)** परदा !

(परदा गिरता है)

मैं माफ़ी चाहता हूं। मैं यह भूल गया था कि कुछ चुने हुए लोग ही नाटक लिख सकते हैं और रंगमंच पर अभिनय कर सकते हैं। मैंने उनके एकाधिकार में बाधा डाली है ! मुझे ... मैं **(वह कुछ और कहना चाहता है, लेकिन हाथ झटककर बायीं ओर चला जाता है)**

अर्कादिना : इसे हुआ क्या है ?

सोरिन : इरीना, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था, नौजवान आदमी के आत्माभिमान का ध्यान रखना चाहिये था।

अर्कादिना : मैंने इसे कहा ही क्या है ?

सोरिन : तुमने उसके दिल को ठेस लगायी है।

अर्कादिना : उसने तो ख़ुद पहले से ही कह दिया था कि यह प्रहसन है। मैंने उसके नाटक को प्रहसन ही समझा।

सोरिन : फिर भी ...

अर्कादिना : अब पता चला कि उसने एक महान कृति रची है! भई वाह! उसने मज़ाक़ के लिये तो यह नाटक नहीं खेला है और गन्धक की बदबू फैलायी है, बल्कि विरोध-भावना प्रकट करने को ऐसा किया है... वह हमें यह सीख देना चाहता था कि क्या लिखना और रंगमंच पर क्या खेलना चाहिये। आख़िर ऐसी बातों से तो आदमी तंग आ जाता है। लगातार मुझ पर यह छींटाकशी, मुझ पर इन व्यंग्य-बाणों की बौछार, आप कुछ भी क्यों न कहें, कोई भी आदमी ऐसी बातों से दुखी हो उठेगा। सनकी और घमंडी छोकरा।

सोरिन : वह तो तुम्हें ख़ुशी देना चाहता था।

अर्कादिना : सच? तो उसने कोई साधारण नाटक क्यों नहीं चुना और किसलिये हमें यह ह्रासोन्मुख बकवास सुनने को मजबूर किया? मज़ाक़ के लिये मैं बकवास सुनने को भी तैयार हूं, लेकिन यहां तो नये कला-रूपों और नव कला-युग के दावे किये जा रहे हैं। मेरे ख़्याल में तो यहां नये कला-रूपों जैसा कुछ नहीं है, बल्कि सिर्फ़ बद मिज़ाजी है।

त्रिगोरिन : हर कोई वैसे ही लिखता है, जैसे चाहता है और जैसे लिख सकता है।

अर्कादिना : वह जैसे चाहता और जैसे लिख सकता है, लिखे, मगर मुझे बख़्श दे।

दोर्न : जुपीटर, तुम नाराज़ हो गयीं ...

अर्कादिना : मैं जुपीटर नहीं, नारी हूं। (**सिगरेट जलाती है**) मैं नाराज़ नहीं हो रही हूं, मुझे सिर्फ़ इस बात का अफ़सोस है कि यह नौजवान ऐसे ऊबभरे ढंग से अपना समय बिताता है।

मैं उसके दिल को ठेस नहीं लगाना चाहती थी।

मेद्वेदेन्को : आत्मा को मूल तत्त्वों से अलग करने का किसी को भी अधिकार नहीं है, क्योंकि, बहुत सम्भव है कि स्वयं आत्मा भी भौतिक अणुओं का संचित रूप हो। (**त्रिगोरिन से सोत्साह**) सुनिये, हम अध्यापकों की ज़िन्दगी कैसी है इस पर नाटक लिखना और फिर उसे मंचित करना चाहिये। कठिन, बहुत कठिन ज़िन्दगी है हमारी!

अर्कादिना : ऐसा करना उचित होगा, लेकिन हम न तो नाटकों और न अणुओं की ही बात करेंगे। शाम इतनी प्यारी है! महानुभावो, सुन रहे हैं, कहीं लोग गा रहे हैं? (**कान लगाकर सुनती है**) कितना अच्छा गाना है!

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : यह तो उस पार गा रहे हैं।

(**ख़ामोशी**)

अर्कादिना (त्रिगोरिन से) : मेरे पास बैठ जाइये। १०-१५ साल पहले इस झील पर लगभग हर रात को लगातार गाना-बजाना सुनाई दिया करता था। यहां तट पर ज़मींदारों की छः हवेलियां हैं। मुझे याद है कि यहां हंसी-ठहाके, हो-हल्ला और गोलियों की ठांय-ठांय की आवाज़ें गूंजती रहती थीं और इश्क-मुहब्बत की ही बातें हुआ करती थीं... उन दिनों छः की छः हवेलियों के हीरो और सबके दिलों के राजा थे (**दोर्न की ओर सिर से इशारा करती है**) हमारे यह डाक्टर येव्गेनी सेर्गेयेविच। यह तो अब भी कुछ कम दिलचोर नहीं हैं, लेकिन उन दिनों तो सभी औरतें इनकी दीवानी थीं। मगर अब मेरी आत्मा मुझे कचोटने लगी है। किसलिये मैंने अपने बेचारे बेटे के दिल को ठेस लगा दी? मेरे मन को चैन नहीं। (**ऊंचे**) कोस्त्या! बेटे! कोस्त्या!

माशा : मैं जाकर उसे ढूंढ़ती हूं।

अर्कादिना : कृपया जाकर ढूंढ़ो, मेरी प्यारी।

माशा (बायें जाती है) : हलो! कहां हैं आप, कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच!.. हलो! **(जाती है)**

नीना (रंगमंच के पीछे से सामने आकर) : लगता है कि खेल अब आगे तो जारी नहीं रहेगा, मैं बाहर आ सकती हूं। नमस्ते! **(अर्कादिना और पोलीना अन्द्रेयेव्ना को चूमती है)**

सोरिन : शाबाश! शाबाश!

अर्कादिना : शाबाश! शाबाश! हम तो मुग्ध रह गये। ऐसे रंग-रूप और ऐसी प्यारी आवाज़ के साथ गांव में बैठे रहना गुनाह है। आप में ज़रूर प्रतिभा है। सुनती हैं? आपको अवश्य ही थियेटर में जाना चाहिये।

नीना : ओह, यह तो मेरा सपना है! **(आह भरकर)** किन्तु यह कभी साकार नहीं होगा।

अर्कादिना : कौन जाने ? लाइये, आपका परिचय करवा दूं – यह हैं त्रिगोरिन बोरिस अलेक्सेयेविच।

नीना : ओह, बहुत ख़ुशी हुई आपसे मिलकर ... **(शर्माते हुए)** मैं हमेशा आपकी रचनायें पढ़ती हूं ...

अर्कादिना (नीना को अपने पास बिठाकर) : शर्माओ नहीं, प्यारी। यह प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, किन्तु बहुत सीधे-सादे। देख रही हैं, यह तो स्वयं शर्मा रहे हैं।

दोर्न : मेरे ख़्याल में अब तो परदा उठा दिया जाना चाहिये। नहीं तो घबराहट महसूस हो रही है।

शाम्रायेव (ऊंची आवाज़ में) : याकोव, परदा उठा दो, भैया।

(परदा उठता है)

नीना (त्रिगोरिन से) : सच, अजीब नाटक है न?

त्रिगोरिन : मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ा। वैसे, मैंने बड़े चाव से इसे देखा। आपने बहुत स्वाभाविक अभिनय किया। मंच-सज्जा भी बढ़िया थी।

(ख़ामोशी)

इस झील में मछलियां तो बहुत होंगी?

नीना : हां।

त्रिगोरिन : मछलियां पकड़ना मुझे बहुत पसन्द है। मेरे लिये शाम ढले नदी तट पर बैठने और बंसी को देखते रहने से बढ़कर कोई दूसरा सुख नहीं।

नीना : किन्तु मैं सोचती हूं कि जिसे सृजन-सुख की अनुभूति हो चुकी है, उसके लिये किसी दूसरे सुख-आनन्द का अस्तित्व ही नहीं रह जाता।

अर्कादिना (हंसते हुए) : ऐसे नहीं कहिये। जब इनसे अच्छी-अच्छी बातें कही जाती हैं तो इनका बुरा हाल होने लगता है।

शाम्रायेव : मुझे याद है कि मास्को के ऑपेरा थियेटर में प्रसिद्ध गायक सील्वा ने मन्द सप्तक का 'सा' छुआ। संयोग की बात कि इसी समय हमारे गिरजे की भजन-मण्डली का मन्द सप्तक का गायक भी गैलरी में बैठा था। आप कल्पना कीजिये कि अचानक गैलरी से हम सबको हैरान करनेवाली उसकी आवाज़ सुनाई दी : "शाबाश, सील्वा!" पूरा सप्तक ही नीचे उतर गया ... इस तरह **(मन्द स्वर में) :** शाबाश, सील्वा! .. सारा थियेटर स्तब्ध रह गया।

(ख़ामोशी)

दोर्न : हम पर भी ख़ामोशी का फ़रिश्ता छा गया है।

नीना : मेरे जाने का वक़्त हो गया। नमस्ते।

अर्कादिना : कहां ? इतनी जल्दी कहां चल दीं ? हम आपको नहीं जाने देंगे।

नीना : पिता जी मेरा इन्तज़ार करते होंगे।

अर्कादिना : वह तो सचमुच बड़े अजीब आदमी हैं ... (**एक-दूसरी को चूमती हैं**) ख़ैर, लाचारी है। आपको जाने की अनुमति देते हुए अफ़सोस, बड़ा अफ़सोस हो रहा है।

नीना : काश, आप जानतीं कि यहां से जाते हुए मेरे दिल पर कितनी भारी गुज़र रही है !

अर्कादिना : मेरी गुड़िया, आपको घर तक पहुंचाने के लिये हम किसी को आपके साथ भेज सकते हैं।

नीना (घबराकर) : ओह, नहीं, हरगिज़ नहीं !

सोरिन (मिन्नत करते हुए) : रुक जाइये न !

नीना : यह सम्भव नहीं, प्योत्र निकोलायेविच।

सोरिन : बस, एक घण्टा ही रुक जाइये। सच, इसमें क्या मुश्किल है ...

नीना (कुछ क्षण सोचकर, आंसू बहाते हुए) : यह सम्भव नहीं ! (**हाथ मिलाकर जल्दी से चली जाती है**)

अर्कादिना : सचमुच बड़ी बदक़िस्मत लड़की है। सुनने में आया है कि इसकी दिवंगता मां ने अपनी बहुत बड़ी सम्पत्ति की आख़िरी कौड़ी तक इसके पिता के नाम कर दी थी और चूंकि पिता ने वह सारी सम्पत्ति अपनी दूसरी बीवी के नाम कर दी, इसलिये यह लड़की बिल्कुल ख़ाली हाथ रह गयी। यह बहुत बुरी बात है।

दोर्न : हां, इसका बाप ख़ासा उल्लू है, ऐसी ही प्रशंसा के योग्य है।

सोरिन (अपने ठिठुरे हाथों को मलते हुए) : तो महानुभावो,

हमें भी चलना चाहिये क्योंकि नमी बढ़ती जा रही है। मेरी टांगों में दर्द होने लगा है।

अर्कादिना: तुम्हारी टांगें तो मानो लकड़ी की हो गयी हैं, मुश्किल से ही चल-फिर सकते हो। आओ चलें, क़िस्मत के मारे बुड्ढे। (**उसकी बांह थाम लेती है**)

शाम्रायेव (बीवी की तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए): मदाम?

सोरिन: कुत्ते का भौंकना मुझे फिर से सुनाई दे रहा है। (**शाम्रायेव से**) इल्या अफ़ानास्येविच, कृपया कुत्ते की ज़ंजीर खोल देने को कह दीजिये।

शाम्रायेव: ऐसा नहीं किया जा सकता, प्योत्र निकोलायेविच। मुझे डर है कि खलिहान में कहीं चोर न घुस जायें। वहां जुआर-बाजरा रखा है। (**अपने साथ चलते मेद्वेदेन्को से**) हां, और खुद एकदम पूरा सप्तक ही नीचे उतर गया – "शाबाश, सील्वा!" फिर वह तो कोई गायक नहीं, गिरजे की भजन-मण्डली का भजनीक ही था।

मेद्वेदेन्को: गिरजे के भजनीक को कितना वेतन मिलता है?

(**दोर्न के सिवा सब चले जाते हैं**)

दोर्न (स्वगत): मैं नहीं जानता, शायद मैं कुछ समझता-बूझता नहीं या फिर मेरा दिमाग़ चल निकला है, लेकिन नाटक मुझे अच्छा लगा। उसमें कोई खास बात है ज़रूर। जब इस लड़की ने एकाकीपन की चर्चा की और बाद में शैतान की लाल आंखें दिखाई दीं तो उत्तेजना से मेरे हाथ कांप रहे थे। इसमें ताज़गी है, सादगी है... लगता है कि वह आ रहा है। मेरा मन चाह रहा है कि मैं उसकी अधिक से अधिक प्रशंसा करूं।

त्रेप्लेव (प्रवेश करता है): सभी चले गये।

दोर्न : मैं यहां हूं।

त्रेप्लेव : माशा मुझे सारे बाग़ में ढूंढ़ती फिर रही है। उससे पिंड छुड़ाना आसान नहीं।

दोर्न : कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच, मुझे आपका नाटक बहुत ही पसन्द आया। वह अजीब-सा है, उसका अन्त भी देखने-सुनने को नहीं मिला, फिर भी उसने मन पर बहुत गहरा असर छोड़ा है। आप प्रतिभावान व्यक्ति हैं, आपको इस कार्य में लगे रहना चाहिये।

(त्रेप्लेव तपाक से हाथ मिलाता है और जोश से उसे गले लगाता है)

छिः कितने भावुक हैं। फ़ौरन आंखें छलछला आयीं... जानते हैं, मैं क्या कहना चाहता हूं? आपने अमूर्त्त विचारों को नाटक का विषय बनाया है। ऐसा ही करना चाहिये, क्योंकि कला-कृति को अवश्य ही किसी महान विचार को अभिव्यक्ति देनी चाहिये। गम्भीरता ही श्रेष्ठता है। आप कैसे पीले-पीले दिख रहे हैं!

त्रेप्लेव : तो आपका कहना है कि मुझे इस कार्य में लगे रहना चाहिये?

दोर्न : हां... लेकिन महत्त्वपूर्ण और शाश्वत को ही अभि-व्यक्ति दें। आप जानते हैं कि मैंने बड़ा रंग-रंगीला और सुरु-चिपूर्ण जीवन बिताया है, मन में कोई अरमान नहीं, किन्तु यदि मैं उस आत्मिक आनन्द को अनुभव कर सकता जो कलाकार सृजन के समय महसूस करता है तो मुझे लगता है कि मैं अपने शारीरिक ढांचे और उससे सम्बन्धित हर चीज़ को घृणा की दृष्टि से देखता और धरती से दूर, कहीं बहुत ऊंचाई पर पहुंच जाता।

त्रेप्लेव: क्षमा चाहता हूं, लेकिन यह बताइये, नीना कहां है?

दोर्न: एक और बात भी। कला-कृति में कोई स्पष्ट और निश्चित विचार होना चाहिये। आपको यह मालूम होना चाहिये कि आप किसलिये लिख रहे हैं। नहीं तो, अगर आप किसी निश्चित लक्ष्य के बिना इस रंगीन मार्ग पर बढ़ेंगे तो रास्ते से भटक जायेंगे और आपकी प्रतिभा आपको ले डूबेगी।

त्रेप्लेव (बेसब्री से): नीना कहां है?

दोर्न: घर चली गयी।

त्रेप्लेव (हताशा से): तो अब मैं क्या करूं? मैं उससे मिलना चाहता हूं... मुझे उससे मिलना ही है... मैं उसके यहां जाऊंगा...

(माशा आती है)

दोर्न (त्रेप्लेव से): धीरज से काम लीजिये, मेरे दोस्त।

त्रेप्लेव: लेकिन मैं जाऊंगा ही। मुझे जाना ही है।

माशा: कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच, घर जाइये। आपकी अम्मां आपकी राह देख रही हैं। वह बहुत बेचैन हैं।

त्रेप्लेव: उससे कह दीजिये कि मैं चला गया। और आप सभी से यह अनुरोध करता हूं कि मुझे परेशान न करें! मुझे मेरे हाल पर छोड़ दें! मेरे पीछे नहीं पड़े रहें!

दोर्न: नहीं, नहीं, मेरे प्यारे... ऐसे नहीं कहना चाहिये... यह अच्छा नहीं।

त्रेप्लेव (आंसू बहाते हुए): नमस्ते, डाक्टर। धन्यवाद... **(जाता है)**

दोर्न (आह भरकर): जवानी, जवानी!

माशा: जब कहने को और कुछ नहीं सूझता तो "जवानी,

जवानी" का राग अलापा जाता है... (**नसवार सूंघती है**)

दोर्न (**नासदानी लेकर झाड़ियों में फेंकते हुए**): यह बेहूदगी है!

(**ख़ामोशी**)

लगता है कि घर में तो पियानो-वादन शुरू हो गया है। चलना चाहिये।

माशा: ज़रा रुकिये।

दोर्न: क्या बात है?

माशा: मैं फिर एक बार आप से कुछ कहना चाहती हूं। मैं आपसे बातें करना चाहती हूं। (**घबराते हुए**) अपने पिता को मैं नहीं चाहती... लेकिन आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। न जाने क्यों, मैं जी-जान से यह अनुभव करती हूं कि आप मेरे हृदय के निकट हैं... आप मेरी मदद करें। मेरी मदद करें, वरना मैं कोई बेवक़ूफ़ी कर बैठूंगी, अपनी ज़िन्दगी के साथ कोई खिलवाड़ कर लूंगी, उसे बरबाद कर डालूंगी... अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती...

दोर्न: क्या बात है? क्या मदद करूं मैं तुम्हारी?

माशा: मैं यातना सह रही हूं। कोई भी तो नहीं जानता मेरी यातनाओं को! (**दोर्न की छाती पर सिर रखकर धीरे से**) मैं कोन्स्तान्तीन को प्यार करती हूं।

दोर्न: सभी कैसे बौखलाये हुए हैं! सभी कैसे बौखलाये हुए हैं! और कितना प्यार उमड़ा पड़ रहा है यहां... ओह जादू-टोना करनेवाली झील! (**प्यार से**) लेकिन मैं क्या कर सकता हूं, मेरी बिटिया? क्या? क्या कर सकता हूं?

(**परदा गिरता है**)

दूसरा अंक

(क्रोकेट* खेलने का छोटा-सा मैदान। दायीं ओर दूरी पर बड़े बरामदेवाला मकान, बायीं ओर झील, जिसमें प्रतिबिम्बित होता हुआ सूरज चमचमा रहा है। फूलों की क्यारियां। दोपहर। गर्मी। मैदान के एक ओर पुराने लाइम पेड़ के नीचे एक बेंच पर अर्कादिना, दोर्न और माशा बैठे हैं। दोर्न के घुटनों पर खुली हुई किताब रखी है।)

अर्कादिना (माशा से) : आइये, हम दोनों एक-दूसरी के साथ सटकर खड़ी हों।

(दोनों खड़ी हो जाती हैं)

आप बाईस साल की हैं और मेरी उम्र इससे लगभग दुगुनी है। येव्गेनी सेर्गेयेविच, बताइये हममें किसकी उम्र कम लगती है?

दोर्न : बेशक आपकी।

अर्कादिना : देखा ... जानती हैं क्यों? इसलिये कि मैं काम में जुटी रहती हूं, तरह-तरह के अनुभव प्राप्त करती हूं, लगातार दौड़-धूप करती रहती हूं, जबकि आप एक ही जगह पर बैठी रहती हैं, ज़िन्दगी को जीती नहीं हैं ... फिर मैंने उसूल बना रखा है – भविष्य की चिन्ता के फेर में नहीं पड़ो। मैं कभी भी बुढ़ापे और मौत के बारे में नहीं सोचती। जो होना है, सो तो होगा ही। •

माशा : किन्तु मुझे ऐसे अनुभव होता है मानो मेरा जन्म हुए एक युग बीत गया है और अपनी ज़िन्दगी को मैं अन्तहीन

---

* लकड़ी के गेंद और बल्लों से खेला जानेवाला खेल। – अनु०

झब्बे की तरह अपने पीछे घसीटती जा रही हूं... अक्सर जीने की बिल्कुल चाह ही नहीं रहती। (**बैठती है**) वैसे, यह सब बकवास है। इस सब को अपने दिल-दिमाग़ से निकाल फेंकना चाहिये।"

दोर्न (**गुनगुनाता है**): "मेरी कलियो, उसको मेरा हाल बताना ..."

अर्कादिना: इसके अलावा मैं अंग्रेज़ों की तरह बड़े तौर-तरीक़े से रहती हूं। जैसा कि कहा जाता है, मेरी प्यारी, मैं अपने को हमेशा सुर किये हुए साज़ की तरह रखती हूं, ढंग के कपड़े पहने और कंघी-चोटी किये हुए। मैं गाउन पहने या बाल संवारे बिना बगीचे तक ही घर से बाहर चली जाऊं? नहीं, कभी नहीं। मैं इसी कारण अपने को ऐसे सहेज पायी हूं कि कभी फूहड़ नहीं थी, कभी वैसे भद्दे ढंग से नहीं रही जैसे कुछ दूसरी औरतें रहती हैं... (**कूल्हों पर हाथ रखकर मैदान में चक्कर लगाती है**) देखिये तो कैसी फुर्ती है मुझ में। पन्द्रह साल की युवती की भूमिका भी निभा सकती हूं।

दोर्न: फिर भी मैं अब किताब को आगे पढ़ना शुरू करता हूं। (**किताब हाथ में लेता है**) हम लोगों ने ग़ल्ले के व्यापारियों और चूहों पर पढ़ना छोड़ा था...

अर्कादिना: हां, चूहों पर। पढ़ना शुरू कीजिये। (**बैठ जाती है**) वैसे, मुझे दीजिये, मैं पढ़ूंगी। मेरी बारी है। (**किताब लेकर नज़रों से वह जगह ढूंढ़ती है जहां से आगे पढ़ना चाहिये**) और चूहे... यह रहा... (**पढ़ती है**) "और ज़ाहिर है कि ऊंचे समाज के लोगों के लिये उपन्यासकारों को सिर चढ़ाना और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करना वैसा ही ख़तरनाक है जैसे ग़ल्ले के व्यापारियों के लिये अपने गोदामों में चूहे पालना। फिर भी उन्हें प्यार किया जाता है। जब कोई औरत उस

लेखक को चुन लेती है जिसे अपने वश में करना चाहती है तो वह उसके गिर्द प्रशंसा, कृपा और सभी तरह की ख़ुशामद-चापलूसी का घेरा डाल देती है..." लेकिन यह सब कुछ शायद फ़्रांसीसियों के बारे में ठीक हो, मगर अपने यहां ऐसा कुछ नहीं होता। हमारे यहां तो औरत लेखक को अपने वश में करने के पहले ख़ुद ही पूरी तरह से उसकी दीवानी हो जाती है, उसके प्यार की भीख मांगने लगती है। दूर जाने की क्या ज़रूरत है, मुझे और त्रिगोरिन को ही ले लीजिये...

(छड़ी का सहारा लेकर सोरिन और उसके साथ नीना आते हैं। उनके पीछे मेद्वेदेन्को पहियोंवाली ख़ाली कुर्सी को धकेलता हुआ लाता है)

सोरिन (बालक जैसे लाड़-प्यार करने के लहजे में): सच? तो आज हम ख़ुश हैं? आख़िर आज हमारे लिये हंसी-ख़ुशी का दिन आया है? **(बहन से)** हमारे यहां ख़ुशख़बरी है! पिता और सौतेली मां त्वेर चले गये हैं और हम पूरे तीन दिनों के लिये आज़ाद हैं।

नीना (अर्कादिना के पास बैठती है और उसका आलिंगन करती है): मैं बहुत ख़ुश हूं! अब मैं पूरी तरह से आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूं।

सोरिन (अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है): आज यह बड़ी प्यारी लग रही है।

अर्कादिना: बनी-ठनी और आकर्षक भी... शाबाश। **(नीना को चूमती है)** लेकिन ज़्यादा तारीफ़ नहीं करनी चाहिये। कहीं नज़र ही न लग जाये। बोरिस अलेक्सेयेविच कहां हैं?

नीना: वह तो घाट पर मछली पकड़ रहे हैं।

अर्कादिना : अजीब बात है, उनका मन भी नहीं उकताता ! **(आगे पढ़ना जारी रखना चाहती है)**

नीना : यह आप कौन-सी किताब पढ़ रही हैं ?

अर्कादिना : मोपासां की 'सूल्या', मेरी प्यारी। **(मन ही मन कुछ पंक्तियां पढ़ती है)** आगे न तो दिलचस्प है और न सही। **(किताब बन्द कर देती है)** मेरा मन बेचैन है। यह बताइये कि मेरे बेटे को क्या हो गया है ? वह इतना उदास-उदास और उखड़ा-उखड़ा क्यों रहता है ? झील पर ही पूरा-पूरा दिन बिता देता है। मैं तो उसे लगभग देख नहीं पाती।

माशा : उनका मन आकुल है। **(सहमते हुए नीना से)** कृपया उनके नाटक का कोई अंश सुनाइये !

नीना (कंधे झटककर) : आप सचमुच ऐसा चाहती हैं ? बड़ा नीरस नाटक है वह !

माशा (अपने उल्लास को दबाते हुए) : जब वह खुद कुछ पढ़कर सुनाते हैं तो उनकी आंखें चमकने लगती हैं और चेहरे का रंग पीला पड़ जाता है। उनकी आवाज़ बड़ी प्यारी है, दर्दभरी और उनका अन्दाज़ है शायर का।

(सोरिन के खर्राटे सुनाई देते हैं)

दोर्न : शुभरात्रि !

अर्कादिना : पेत्रूशा !

सोरिन : क्या है ?

अर्कादिना : सो रहे हो ?

सोरिन : नहीं तो।

(ख़ामोशी)

अर्कादिना: तुम अपना इलाज नहीं करवाते। यह अच्छी बात नहीं है, भैया।

सोरिन: मैं तो ख़ुशी से इलाज करवाऊं; लेकिन डाक्टर करे भी तो।

दोर्न: साठ साल की उम्र में इलाज!

सोरिन: साठ साल की उम्र में भी जीने को मन करता है।

दोर्न (खीझकर): अच्छा! तो जड़ी-बूटियों की कुछ बूंदें पी लीजिये।

अर्कादिना: मुझे लगता है कि भैया को खनिज-जल के स्नान के लिये कहीं जाना चाहिये। वह अच्छा रहेगा।

दोर्न: क्या कहा जाये? जा भी सकते हैं, नहीं भी जा सकते।

अर्कादिना: इसका कोई क्या मतलब समझे।

दोर्न: समझने को कुछ है ही नहीं। सब कुछ बिल्कुल साफ़ है।

(ख़ामोशी)

मेद्वेदेन्को: प्योत्र निकोलायेविच को तम्बाकू पीना छोड़ देना चाहिये।

सोरिन: बेतुकी बात है।

दोर्न: नहीं, बेतुकी बात नहीं। शराब और तम्बाकू आदमी से उसका व्यक्तित्व छीन लेते हैं। सिगार या वोद्का का जाम पीने के बाद आप प्योत्र निकोलायेविच के साथ-साथ कुछ और भी हो जाते हैं। तब आपका "मैं" फैल जाता है और आप खुद अपने को कोई अन्य व्यक्ति ही मानने लगते हैं।

सोरिन (हंसता है): आपके लिये टीका-टिप्पणी करना बड़ा आसान है। आपने अपने वक़्त में ख़ूब मज़े किये हैं, लेकिन मैंने? मैंने क़ानूनी विभाग में २८ साल तक नौकरी की, मगर अभी

तक जीकर नहीं देखा, कुछ भी अनुभव नहीं किया। फिर यह समझना कुछ मुश्किल नहीं कि मेरा जीने को बहुत मन होता है। आप तृप्त और उदासीन हैं और इसलिये फ़लसफ़ा बघारा करते हैं। लेकिन मैं जीना चाहता हूं और इसलिये भोजन के वक़्त शेरी और फिर सिगार पीता हूं। बस, इतनी ही बात है।

दोर्न : ज़िन्दगी की तरफ़ संजीदा रवैया होना चाहिये। साठ साल की उम्र में इलाज करवाना और इस बात का रोना रोना कि जवानी के दिनों में काफ़ी मज़े नहीं लूट सका, माफ़ी चाहता हूं, यह छिछोरपन है।

माशा (उठती है) : शायद भोजन का वक़्त हो गया। (**धीमी, ढीली-ढाली चाल से चलती है**) मेरा तो पांव सो गया ... (**जाती है**)

दोर्न : जाकर भोजन के पहले दो जाम चढ़ायेगी।

सोरिन : बेचारी की ज़िन्दगी में कोई ख़ुशी नहीं।

दोर्न : यह बकवास है, हुज़ूर।

सोरिन : आप एक तृप्त आदमी की तरह बातें करते हैं।

अर्कादिना : ओह, गांव की इस प्यारी ऊब से अधिक ऊबभरा क्या हो सकता है। गर्मी, शान्ति, सभी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, सभी फ़लसफ़े की टांग तोड़ते हैं ... दोस्तो, आपके साथ समय बिताना, आपकी बातें सुनना अच्छा लगता है, लेकिन ... किसी होटल के कमरे में बैठकर अपनी भूमिका याद करना – यह कहीं अधिक सुखद है!

नीना (उल्लासपूर्वक) : बिल्कुल ठीक! मैं आपकी बात को समझती हूं।

सोरिन : बेशक शहर में कहीं अधिक अच्छा है। आदमी आराम से अपने दफ़्तर में बैठा रहता है, चपरासी सूचना दिये बिना किसी को अन्दर नहीं आने देता, टेलीफ़ोन सामने रखा

होता है... सड़क पर बग्घियां और चहल-पहल होती है...

दोर्न (गुनगुनाता है) : "मेरी कलियो, उससे जाकर तुम यह कहना..."

(शाम्रायेव और उसके पीछे पोलीना अन्द्रेयेव्ना का प्रवेश)

शाम्रायेव : यहां हैं हमारे सभी लोग। नमस्ते! **(अर्कादिना और फिर नीना का हाथ चूमता है)** आपको ठीक-ठाक देखकर बहुत खुश हूं। **(अर्कादिना से)** मेरी बीवी का कहना है कि आज आप उसके साथ शहर जाने का इरादा रखती हैं। यह सच है क्या?

अर्कादिना : हां, हमारा ऐसा इरादा तो है।

शाम्रायेव : हुंह... यह नेक ख़्याल है, लेकिन अत्यधिक मान-नीया, आप जायेंगी किस सवारी से? आज हमारे यहां कूटू बोया जा रहा है और सभी लोग बहुत व्यस्त हैं। कृपया यह जानने की अनुमति दीजिये कि आप कौन-से घोड़े ले जायेंगी?

अर्कादिना : कौन-से घोड़े? मैं क्या जानूं कि कौन-से घोड़े!

सोरिन : हमारे यहां बग्घी में जुतनेवाले घोड़े तो हैं।

शाम्रायेव (भड़कते हुए) : बग्घी में जुतनेवाले घोड़े? मगर उनके लिये मैं साज़ कहां से लाऊंगा? कहां से लाऊंगा मैं साज़? यह भी ख़ूब रही! यह मेरी समझ के बाहर है! अत्यधिक माननीया! आपकी प्रतिभा के सामने मैं सिर झुकाता हूं, आपके लिये अपनी ज़िन्दगी के दस साल भी कुर्बान कर सकता हूं, लेकिन घोड़े मैं आपको नहीं दे सकता!

अर्कादिना : किन्तु यदि मुझे जाना ही है, तो? अजीब बात है!

शाम्रायेव : अतीव माननीया! आप नहीं जानतीं कि खेती-बाड़ी किसे कहते हैं!

अर्कादिना (ग़ुस्से से) : यह पुराना क़िस्सा है! अगर ऐसी बात है तो मैं आज ही मास्को जा रही हूं। मेरे लिये गांव से किराये के घोड़े मंगवा दीजिये, वरना मैं पैदल ही स्टेशन पर चली जाऊंगी।

शाम्रायेव (ग़ुस्से से) : तो मैं भी नौकरी से इस्तीफ़ा देता हूं। कोई दूसरा कारिन्दा ढूंढ़ लीजिये। **(जाता है)**

अर्कादिना : हर गर्मी में यही होता है, हर गर्मी में मेरा इसी तरह अपमान किया जाता है! अब कभी भूलकर भी मैं यहां नहीं आऊंगी!

(बायीं ओर जाती है जहां घाट है। क्षण भर बाद वह घर में जाती दिखाई देती है। बंसियां और बालटी लिये हुए त्रिगोरिन उसके पीछे-पीछे जाता नज़र आता है)

सोरिन (ग़ुस्से से) : यह एकदम बदतमीज़ी है! शैतान जाने, यह सब क्या क़िस्सा है! जी तंग आ गया है इस सबसे! इसी वक़्त सब घोड़े यहां लाये जायें!

नीना (पोलीना अन्द्रेयेव्ना से) : प्रसिद्ध अभिनेत्री, इरीना निकोलायेव्ना को घोड़ों से इन्कार किया जाये! क्या उनकी सभी इच्छायें, यहां तक कि सनकें भी आपकी खेती-बाड़ी से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं हैं? बड़ी अजीब बात है!

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (हताशा से) : भला मैं क्या कर सकती हूं? अपने को मेरी स्थिति में रखकर देखिये – मैं क्या कर सकती हूं?

सोरिन (नीना से) : आइये, हम दोनों मेरी बहन के पास चलते हैं... हम सभी उसकी मिन्नत करेंगे कि वह न जाये। ठीक है न? **(शाम्रायेव जिधर गया था, उस दिशा में**

देखते हुए) बहुत ही ज़िद्दी आदमी है! पूरा तानाशाह!

नीना (सोरिन को उठने से रोकते हुए) : बैठे रहिये... बैठे रहिये... हम आपकी कुर्सी को ठेल ले चलेंगे...

(नीना और मेद्वेदेन्को कुर्सी को धकेलते हैं)

ओह, यह कैसी भयानक बात है!

सोरिन : हां, हां, भयानक बात है... लेकिन उसकी यह मनमानी चलेगी नहीं, मैं अभी उससे बात करूंगा।

(सब जाते हैं, केवल दोर्न और पोलीना अन्द्रेयेव्ना ही रह जाते हैं)

दोर्न : लोग ऊब पैदा करते हैं। वैसे, आपके पति को तो कान पकड़कर यहां से बाहर निकाल देना चाहिये। लेकिन इस किस्से का अन्त यही होगा कि यह औरतों जैसा खूसट प्योत्र निकोलायेविच और उसकी बहन उससे माफ़ी मांग लेंगे। देख लीजियेगा!

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : बग्घी के घोड़े भी उसी ने खेत में भेज दिये हैं। हर दिन ही ऐसी अटपटी बातें होती रहती हैं। काश, आपको मालूम होता कि इस सबसे मुझे कितनी अधिक परेशानी होती है! मेरी तबीयत ख़राब हो जाती है। देखते हैं न, मैं अभी तक कांप रही हूं... उसका बदतमीज़ी का रवैया मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। (**मिन्नत करते हुए**) येव्गेनी, मेरे प्यारे, मेरी आंखों के तारे, मुझे अपनी बना लो... हमारा वक़्त बीतता जा रहा है, हम अब जवान नहीं रहे, कम से कम ज़िन्दगी के आख़िरी सालों में तो हम लुका-छिपी के फेर में न पड़े रहें, झूठ न बोलें...

दोर्न : मैं पचपन का हो चुका हूं, मैं अपनी ज़िन्दगी का ढर्रा नहीं बदल सकता।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : मैं जानती हूं कि आप इसलिये मुझे इन्कार करते हैं कि मेरे अलावा और भी औरतों से आपकी घनिष्ठता है। आप सभी को तो अपने साथ नहीं रख सकते। मैं यह समझती हूं। क्षमा चाहती हूं, आप मुझसे ऊब गये हैं।

(घर के नज़दीक नीना दिखाई देती है। वह फूल तोड़ रही है)

दोर्न : नहीं, ऐसा कुछ नहीं।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : मैं ईर्ष्या की आग में जलती रहती हूं। ज़ाहिर है कि आप डाक्टर हैं, औरतों से दूर नहीं रह सकते। मैं समझती हूं...

दोर्न (नीना से जो निकट आ जाती है) : वहां क्या हाल-चाल है ?

नीना : इरीना निकोलायेव्ना रो रही हैं और प्योत्र निकोलायेविच को दमे का दौरा पड़ा हुआ है।

दोर्न (उठता है) : चलकर दोनों को शान्त करनेवाली दवाई की कुछ बूंदें देता हूं...

नीना (उसे फूल देती है) : आपकी नज़र हैं !

दोर्न : बहुत, बहुत धन्यवाद। **(घर की ओर जाता है)**

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (उसके साथ जाते हुए) : कितने प्यारे फूल हैं। **(घर के निकट, दबी ज़बान से)** मुझे दे दीजिये ये फूल ! दे दीजिये मुझे ये फूल ! **(फूल मिलने पर उन्हें मसलकर एक तरफ़ फेंक देती हैं)**

(दोनों घर में जाते हैं)

नीना (स्वगत) : कितना अजीब लग रहा है यह देखना कि प्रसिद्ध अभिनेत्री ऐसे आंसू बहा रही है और सो भी कितनी मामूली-सी बात के लिये ! और क्या यह भी अजीब बात नहीं है कि एक विख्यात लेखक, लोगों के दिलों का राजा, जिसके बारे में अख़बारों में लिखा जाता है, जिसके छविचित्र बिकते हैं, जिसकी रचनाओं के विदेशी भाषाओं में अनुवाद होते हैं, वह सारा दिन मछलियां पकड़ता है और इस बात से ख़ुश होता है कि उसने दो रोहू मछलियां पकड़ ली हैं। मैं तो यह सोचती थी कि नामी लोग घमंडी, आम लोगों की पहुंच से दूर होते होंगे, कि वे भीड़ से नफ़रत करते होंगे, अपनी ख्याति, अपने नाम की चमक-दमक के बल पर लोगों से इस बात का बदला लेते होंगे कि वे ऊंचे कुल और धन-दौलत को ही सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं। लेकिन वे तो सभी लोगों की तरह रोते हैं, मछलियां पकड़ते हैं, ताश खेलते हैं, हंसते और खीझते-झल्लाते हैं ...

त्रेप्लेव (नंगे सिर, हाथ में बन्दूक और मरी हुई गंगाचिल्ली लिये आता है) : आप यहां अकेली हैं ?

नीना : हां।

(त्रेप्लेव गंगाचिल्ली को उसके पांवों पर रख देता है)

क्या मतलब है इसका ?

त्रेप्लेव : आज मैंने इस गंगाचिल्ली की हत्या करने की नीचता की है। इसे आपके चरणों में रख रहा हूं।

नीना : आपको क्या हुआ है ? **(गंगाचिल्ली को उठाकर देखती है)**

त्रेप्लेव (**कुछ क्षण रुकने के बाद**): जल्द मैं इसी तरह से अपनी हत्या कर लूंगा।

नीना: आप तो बिल्कुल बदल गये हैं।

त्रेप्लेव: हां, जबसे आप बिल्कुल बदल गयी हैं। मेरे प्रति आप पहले जैसी नहीं रहीं, आपकी नज़रों में अब प्यार की गर्मी नहीं है, मेरी उपस्थिति से आपको परेशानी होने लगती है।

नीना: पिछले कुछ अरसे से आप चिड़चिड़े हो गये हैं, समझ में न आनेवाले ढंग, किन्हीं प्रतीकों से अपने को अभिव्यक्त करते हैं। यह गंगाचिल्ली भी शायद कोई प्रतीक है। किन्तु क्षमा कीजिये, मैं इसे समझने में असमर्थ हूं। (**गंगाचिल्ली को बेंच पर रखती है**) मैं बेहद सीधी-सादी लड़की हूं और आपको समझ पाना मेरे बस की बात नहीं।

त्रेप्लेव: यह क़िस्सा उसी शाम से शुरू हुआ, जब बड़े भद्दे ढंग से मेरे नाटक की धज्जियां उड़ा दी गयीं। औरतें असफलता को कभी माफ़ नहीं करतीं। मैंने उसे जला दिया, उस नाटक का आख़िरी टुकड़ा तक जला डाला है। काश, आपको मालूम होता कि मैं कितना दुखी हूं! आपकी यह बेरुख़ी भयानक है, अविश्वसनीय है, मानो मैं नींद से जागूं और यह देखूं कि यह झील सूख गयी है या इसे धरती निगल गयी है। आपने अभी-अभी कहा कि आप बहुत सीधी-सादी हैं और मुझे समझना आपके बस की बात नहीं। ओह, लेकिन इसमें समझने की बात ही क्या है?! मेरा नाटक पसन्द नहीं आया, आप मेरी प्रेरणा से घृणा करती हैं, मुझे अन्य लोगों की तरह मामूली और तुच्छ मानती हैं... (**पांव पटककर**) कितनी अच्छी तरह से मैं यह समझता हूं, कितनी अच्छी तरह से! मेरे दिमाग़ में मानो कोई कील ठुंकी हुई है। मेरे आत्माभिमान के साथ, जो सांप की तरह मेरा ख़ून चूस रहा है, यह कील भी जहन्नुम

में चली जाये ... (**त्रिगोरिन को देखकर जो किताब पढ़ता हुआ आ रहा है**) लीजिये, वह आ रहा है सच्ची प्रतिभा का धनी। वह हेमलेट जैसा है और किताब लिये हुए भी। (**नक़ल उतारते हुए**) : "शब्द, शब्द, शब्द ..." वह सूरज तो अभी आपके पास नहीं आया, लेकिन आप मुस्कराने भी लगीं, उसकी किरणों से आंखों में प्यार की गर्मी भी आ गयी। मैं बाधा नहीं बनूंगा। (**जल्दी से जाता है**)

त्रिगोरिन (नोटबुक में लिखता है) : नसवार सूंघती है और वोद्का पीती है ... हमेशा काले कपड़े पहनती है। अध्यापक उसे प्यार करता है ...

नीना : नमस्ते, बोरीस अलेक्सेयेविच !

त्रिगोरिन : नमस्ते। परिस्थितियों ने अचानक ऐसी करवट ली है कि लगता है, हम आज यहां से चले जायेंगे। शायद ही अब फिर कभी हमारी मुलाक़ात हो। यह अफ़सोस की बात है। जवान लड़कियों, जवान और ख़ूबसूरत लड़कियों से मेरा अक्सर वास्ता नहीं पड़ता है। मैं भूल चुका हूं और स्पष्ट रूप से यह कल्पना नहीं कर सकता कि १८-१९ साल की उम्र में कोई अपने को कैसे अनुभव करता है। इसलिये मेरे उपन्यासों और कहानियों में युवतियां स्वाभाविक और हाड-मांस की नहीं होतीं। बेशक एक घण्टे को ही, मैं आपकी जगह पर होना चाहता हूं ताकि यह जान सकूं कि आप कैसे सोचती-विचारती हैं और कुल मिलाकर, आप हैं क्या।

नीना : और मैं आपकी जगह पर होना चाहती हूं।

त्रिगोरिन : वह किसलिये ?

नीना : यह जानने के लिये कि प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली लेखक अपने को कैसे अनुभव करता है। ख्याति अपने को कैसे महसूस करती है ? आप जाने-माने व्यक्ति हैं, इससे आपको

कैसी अनुभूति होती है?

त्रिगोरिन: कैसी अनुभूति होती है? शायद कोई भी अनुभूति नहीं होती। मैंने इसके बारे में कभी सोचा ही नहीं। (**कुछ विचार करने के बाद**) दो में से एक बात है–या तो आप मेरी ख्याति को बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रही हैं या फिर इसकी किसी प्रकार भी अनुभूति नहीं होती।

नीना: जब आप अपने बारे में अख़बारों में पढ़ते हैं, तब?

त्रिगोरिन: जब तारीफ़ की जाती है तो अच्छा लगता है और जब भला-बुरा कहा जाता है तो बाद में दो दिन तक मूड ख़राब रहता है।

नीना: कैसी अद्‌भुत दुनिया है आपकी! काश, आप जानते कि कितनी ईर्ष्या होती है मुझे आपसे! लोगों के भाग्य कितने अलग-अलग हैं! कुछ लोग अपनी नीरस, किसी की नज़र में न आनेवाली ज़िन्दगी को जैसे-कैसे घसीटते रहते हैं, सब एक ही सांचे में ढले-ढलाये लगते हैं, सभी क़िस्मत के मारे हुए। दूसरों के भाग्य में, जो आपकी तरह लाखों में एक होते हैं, दिलचस्प, उजली और अर्थपूर्ण ज़िन्दगी लिखी होती है... आप ख़ुशक़िस्मत हैं...

त्रिगोरिन: मैं? (**कंधे झटकता है**) हुंह... आप बात कर रही हैं ख्याति की, सुख-सौभाग्य, किसी उज्ज्वल और दिलचस्प ज़िन्दगी की। मैं क्षमा चाहता हूं, लेकिन मेरे लिये ये प्यारे-प्यारे शब्द उन मिठाइयों के समान हैं जिन्हें मैं कभी नहीं खाता हूं। आप बहुत जवान और बहुत दयालु हैं।

नीना: बहुत शानदार ज़िन्दगी है आपकी!

त्रिगोरिन: इसमें कौन-से सुरख़ाब के पर लगे हैं? (**घड़ी पर नज़र डालता है**) मुझे अब जाकर लिखना चाहिये। माफ़ी चाहता हूं, फ़ुरसत नहीं है... (**हंसता है**) जैसा कि कहा जाता

है, आपने मेरी दुखती रग को छू लिया है। लीजिये, मैं बेचैनी महसूस करने और थोड़ा झुंझलाने लगा हूं। ख़ैर, आइये, हम बातें करें। हम मेरी शानदार और उज्ज्वल ज़िन्दगी की बात करेंगे... तो, कहां से शुरू करें? (**थोड़ा सोचकर**) कुछ ज़ोर-ज़बर्दस्ती की परिकल्पनायें भी होती हैं, जब उदाहरण के लिये, आदमी दिन-रात चांद के बारे में ही सोचता रहता है। मेरा अपना भी एक ऐसा चांद है। मेरे दिल-दिमाग़ पर रात-दिन एक ही ख़्याल छाया रहता है – मुझे लिखना है, मुझे लिखना है... एक उपन्यास ख़त्म होता है कि न जाने क्यों, दूसरा लिखना चाहिये, फिर तीसरा और तीसरे के बाद चौथा... लगातार, रुके बिना लिखता रहता हूं, और कोई चारा ही नहीं। मैं आपसे पूछता हूं कि इसमें क्या शानदार और क्या सुखद है? ओह, यह बेहूदा ज़िन्दगी! देखिये, इस समय मैं आपके साथ हूं, भावनाओं की विह्वलता अनुभव कर रहा हूं, मगर साथ ही एक क्षण को यह नहीं भूल पाता हूं कि अधूरा उपन्यास मेरी राह देख रहा है। यह देखिये, मैं बादल की शक्ल का बड़ा पियानो देखता हूं। उसी वक़्त यह सोचता हूं कि किसी कहानी में यह ज़िक्र करूंगा कि बड़े पियानो की शक्ल का बादल तैर रहा था। हेलीट्राप फूल की महक आती है। मैं झटपट यह सोचता हूं – प्यारी-प्यारी सुगन्ध, विधवा जैसा रंग, गर्मी की शाम के वर्णन के समय इसका उल्लेख करना चाहिये। आपके और अपने हर वाक्य, हर शब्द को पकड़ता हूं, अपने साहित्यिक भण्डार में जल्दी से जमा कर देता हूं – शायद कभी काम आ जायें। काम ख़त्म करने के बाद थियेटर या मछली पकड़ने के लिये भागा जाता हूं। वहां मुझे सब कुछ भूल-भालकर मन बहलाना चाहिये। लेकिन नहीं, कोई नया कथानक लोहे के बहुत बड़े गोले की तरह दिमाग़ में चक्कर काटने लगता है, मैं बरबस मेज़

की तरफ़ खिंचने लगता हूं और बस, फिर से लिखना चाहिये, लिखते जाना चाहिये। हमेशा यही, यही हाल रहता है और मुझे अपने आपसे चैन नहीं मिलता। मैं अनुभव करता हूं कि खुद अपनी ज़िन्दगी को खाये जा रहा हूं। वह शहद जो मैं दूसरों को देता हूं, उसके लिये मैं अपने सबसे अच्छे पुष्पों का पराग इकट्ठा करता हूं, फूलों को तोड़ता और उनकी जड़ों को रौंदता हूं। क्या मैं पागल नहीं हूं? मेरे सगे-सम्बन्धी, मेरी जान-पहचान के लोग क्या मेरे साथ एक स्वस्थ आदमी जैसा व्यवहार करते हैं? "आजकल क्या लिखा जा रहा है? हमें क्या भेंट करने जा रहे हैं?" बार-बार यही पूछा जाता है और मुझे लगता है कि मेरे परिचितों की मेरे बारे में यह चिन्ता, उनकी तारीफ़ें, मेरे प्रति उनका उत्साह – यह सब धोखा है, वे एक बीमार की तरह मेरी आंखों में धूल झोंक रहे हैं। कभी-कभी मुझे डर लगता है कि बस, वे दबे पांव पीछे से मेरे पास आयेंगे, मुझे दबोच लेंगे और पोप्रीश्चिन* की भांति पागलखाने घसीट ले जायेंगे। उन सालों में, जवानी के उन सबसे अच्छे सालों में, जब मैंने लिखना आरम्भ किया, मेरा यह लेखन-कार्य भयानक यातना था। छोटा लेखक, ख़ास तौर पर जब सफलता उसके पांव नहीं चूमती, खुद अपने को बड़ा अटपटा, बेतुका और फालतू महसूस करता है, उसकी नसें तनी और खिंची रहती हैं, वह साहित्य और कला-क्षेत्र के लोगों के पीछे चक्कर काटा करता है, उसकी न तो कोई मान्यता होती है, न कोई उसकी तरफ़ ध्यान देता है और वह उस जोशीले जुआरी की तरह जिसकी जेब ख़ाली हो, लोगों को दिलेरी से देखने, उनसे

---

* महान रूसी लेखक नि० गोगोल (१८०९–१८५२) की कहानी 'पागल की टिप्पणियां' का एक पात्र। – अनु०

नज़रें मिलाने से डरता है। मैंने अपने पाठक को देखा नहीं, लेकिन, न जाने क्यों, मैं एक शत्रु और विश्वास न करनेवाले व्यक्ति के रूप में ही उसकी कल्पना करता हूं। मैं भीड़ से डरता था, मुझे उससे दहशत होती थी और जब कभी मेरा कोई नया नाटक खेला जाता था तो मुझे लगता था कि काले बालोंवाले मुझसे ख़ार खाये बैठे हैं और सुनहरे बालोंवाले एकदम उदासीन हैं। ओह, कितना भयानक था यह सब! कैसी यातना थी यह!

नीना: किन्तु क्या प्रेरणा और सृजन प्रक्रिया से आपको अद्भुत, उल्लास के क्षण नहीं मिलते?

त्रिगोरिन: हां, मिलते हैं। जब लिखता हूं तो अच्छा लगता है। प्रूफ़ पढ़ते वक़्त भी आनन्द मिलता है। लेकिन... ज्यों ही किताब छिपकर निकलती है कि मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती। मैं अनुभव करने लगता हूं कि बात कुछ बनी नहीं, कि मुझसे ग़लती हो गयी है, कि मुझे इसे लिखना ही नहीं चाहिये था। मैं खीझने लगता हूं, मन बुरी तरह परेशान हो उठता है... (**हंसता है**) मगर लोग पढ़कर कहते हैं: "हां, प्यारी चीज़ है, प्रतिभापूर्ण रचना है... प्यारी चीज़ है, मगर तोलस्तोय के पासंग भी नहीं"। या यह: "चीज़ तो बढ़िया है, लेकिन तुर्गेनिव की 'पिता और पुत्र' रचना कहीं अधिक अच्छी है"। इस तरह मेरे क़ब्र में पहुंचने तक लोग इसे प्यारी और प्रतिभापूर्ण, प्यारी और प्रतिभापूर्ण रचना कहते रहेंगे, इससे अधिक कुछ नहीं। जैसे ही चल बसूंगा, वैसे ही मेरी क़ब्र के पास से गुज़रनेवाले परिचित यह कहेंगे: "त्रिगोरिन यहां दफ़न है। अच्छा लेखक था, मगर तुर्गेनिव की टक्कर का नहीं'।

नीना: क्षमा चाहती हूं, किन्तु आपकी बात मानने से इन्कार

करती हूं। सफलता ने आपका दिमाग़ आसमान पर पहुंचा दिया है।

त्रिगोरिन : किस सफलता ने ? मुझे अपना कृतित्व कभी अच्छा नहीं लगा। लेखक के नाते मैं अपने को पसन्द नहीं करता। सबसे बुरी बात तो यह है कि मैं मानो किसी धुंध से घिरा रहता हूं और जो लिखता हूं, अक्सर उसे समझता नहीं हूं... मुझे यह पानी, यह आकाश, ये पेड़ अच्छे लगते हैं, मैं प्रकृति को अनुभव करता हूं, वह मुझमें भावनाओं की बाढ़ लाती है, मेरे दिल में लिखने की अदम्य चाह पैदा करती है। लेकिन मैं केवल प्राकृतिक दृश्यों का ही चितेरा नहीं हूं। मैं नागरिक भी हूं। मैं अपनी मातृभूमि, अपनी जनता को प्यार करता हूं, मुझे अनुभव होता है कि अगर मैं लेखक हूं तो मुझे अपनी जनता, उसके दुख-दर्दों, उसके भविष्य, ज्ञान-विज्ञान, मानव के अधिकारों आदि की चर्चा करनी चाहिये। मैं इन सभी चीज़ों के बारे में लिखता हूं, जल्दी-जल्दी ऐसा करता हूं, मुझे सभी ओर से खदेड़ा जाता है, लोग मुझ पर झुंझलाते हैं, मैं कुत्तों से घिरी हुई लोमड़ी की तरह इधर से उधर भागता हूं, यह देखता हूं कि जीवन और विज्ञान आगे ही आगे बढ़ते जाते हैं और मैं गाड़ी न पकड़ पानेवाले किसान की तरह पीछे छूट गया हूं। आख़िर यह महसूस करने लगता हूं कि मैं केवल प्राकृतिक दृश्य-चित्रण ही कर सकता हूं और बाक़ी सब कुछ शुरू से आख़िर तक झूठा तथा बनावटी है।

नीना : आप अपने काम में ही खोकर रह गये हैं। अपने महत्त्व को समझने के लिये न तो आपके पास समय है और न इच्छा ही। बेशक आप अपने से असन्तुष्ट हैं, मगर दूसरों की नज़रों में महान और ऊंचे हैं! अगर मैं आपके जैसी लेखिका होती तो अपनी सारी ज़िन्दगी लोगों को भेंट कर देती, मगर यह

मानते हुए कि मेरे स्तर तक ऊपर उठने में ही उनका सुख निहित है और वे मुझे कीर्ति-रथ पर बिठाकर ले चलते।

त्रिगोरिन : हां, रथ पर ... मैं कोई अगामेनोन* हूं क्या!

(दोनों मुस्कराते हैं)

नीना : एक लेखिका या कलाकार का सुख पाने के लिये मैं सगे-सम्बन्धियों का विरोध, अभाव-निर्धनता, निराशा-हताशा सभी कुछ सहन कर लेती, मैं किसी झोंपड़े में रहती और मोटा-झोटा खाती, अपनी त्रुटियों-कमियों की चेतना से असन्तोष का ज़हर पीती, लेकिन बदले में केवल ख्याति चाहती ... सच्ची, गूंजती हुई ख्याति ... **(हाथों से मुंह ढांप लेती है)** सिर चकराया जा रहा है ... उफ़! ..

अर्कादिना की आवाज़ (घर से) : बोरीस अलेक्सेयेविच!

त्रिगोरिन : मुझे बुलाया जा रहा है ... शायद चलने की तैयारियां होने लगी हैं। मगर यहां से जाने को मन नहीं हो रहा! **(झील पर नज़र दौड़ाता है)** कितना सुन्दर दृश्य है! ... बहुत ही प्यारा!

नीना : उस तट पर वह हवेली और बाग़ देख रहे हैं न?

त्रिगोरिन : हां!

नीना : यह मेरी दिवंगता मां की हवेली है। मेरा यहीं जन्म हुआ था। इसी झील के आस-पास मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी बिताई है और मैं इसके एक-एक द्वीप से परिचित हूं।

त्रिगोरिन : बहुत ही प्यारी जगह है यह! **(गंगाचिल्ली को देखकर)** अरे, यह क्या है?

नीना : गंगाचिल्ली। कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच ने इसका शि-

---

* ट्राय की लड़ाई में यूनानी फ़ौजों का दिलेर सेनापति। – अनु०

कार किया है।

त्रिगोरिन : सुन्दर पक्षी है। सच, यहां से जाने को मन नहीं हो रहा। आप इरीना निकोलायेव्ना को रुकने के लिये राज़ी कर लीजिये! **(नोटबुक में कुछ लिखता है)**

नीना : यह आप क्या लिख रहे हैं?

त्रिगोरिन : ऐसे ही कुछ लिख रहा हूं... एक कथानक सूझ गया है... **(किताब को छिपाते हुए)** छोटी-सी कहानी का कथानक – झील के तट पर बचपन से ही एक युवती रहती है, आपके जैसी। वह गंगाचिल्ली की भांति झील को प्यार करती है और गंगाचिल्ली की भांति ही सुखी और स्वतन्त्र है। किन्तु संयोग से वहां एक आदमी आता है, उसे देखता है और केवल अपनी ऊब मिटाने के लिये ही इस गंगाचिल्ली की तरह उसकी हत्या कर डालता है!

(ख़ामोशी।
अर्कादिना खिड़की में दिखाई देती है)

अर्कादिना : बोरीस अलेक्सेयेविच, आप कहां हैं?

त्रिगोरिन : अभी आ रहा हूं! **(जाते हुए मुड़कर नीना की ओर देखता है। खिड़की के पास पहुंचकर अर्कादिना से)** क्या बात है?

अर्कादिना : हम नहीं जा रहे हैं।

(त्रिगोरिन घर में जाता है)

नीना (कुछ देर तक सोचने के बाद फुट-लाइटों के पास आती है) : सपना!

(परदा गिरता है)

तीसरा अंक

(सोरिन के मकान का भोजन-कक्ष। दायें-बायें दरवाज़े। बर्तनों की अलमारी। दवाइयोंवाली अलमारी। कमरे के बीचोंबीच मेज़। सूटकेस और गत्ते के डिब्बों से रवाना होने की तैयारी का पता चलता है। त्रिगोरिन भोजन कर रहा है। माशा मेज़ के पास खड़ी है।)

माशा: आप लेखक हैं, इसीलिये मैं आपको यह सब बता रही हूं। किसी रचना में इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आपसे दिल की बात कहती हूं – अगर वह कहीं बुरी तरह अपने को घायल कर लेते तो मैं एक मिनट भी ज़िन्दा न रहती। फिर भी मैं दिल की बड़ी मज़बूत हूं। मैंने यह तय कर लिया है – इस प्यार को दिल से निकाल फेंकूंगी, इसे जड़ से उखाड़ डालूंगी।

त्रिगोरिन: वह किस तरह?

माशा: मैं मेद्वेदेन्को से शादी कर रही हूं।

त्रिगोरिन: अध्यापक से?

माशा: हां।

त्रिगोरिन: मेरी समझ में नहीं आ रहा कि इसमें क्या तुक है।

माशा: किसी आशा के बिना प्यार करना, सालों साल इन्तज़ार करते रहना, इसमें ही क्या तुक है... शादी कर लेने पर प्यार-मुहब्बत की सुध ही नहीं रहेगी। नयी चिन्तायें पुराने सब कुछ का गला घोंट देंगी। और कुछ नहीं, तो थोड़ा-बहुत परिवर्तन तो होगा। आपके लिये एक जाम और भर दूं?

त्रिगोरिन: क्या कुछ ज़्यादा पिलाई तो नहीं हो जायेगी?

माशा: कोई बात नहीं! **(जाम भरती है)** आप मेरी ओर ऐसे नहीं देखें। औरतें आपके अनुमान से कहीं ज़्यादा पीती हैं। मेरी तरह खुल्लम-खुल्ला बहुत कम, मगर चोरी-छिपे कहीं ज़्यादा

ऐसा करती हैं। और पीती भी हैं वोद्का या ब्रांडी। (**उसके जाम से अपना जाम छुआती है**) आपके लिये शुभकामना करती हूं! आप सीधे-सादे आदमी हैं, आप से बिछुड़ते हुए मन को दुख हो रहा है।

(**पीते हैं**)

त्रिगोरिन : मैं तो ख़ुद भी यहां से नहीं जाना चाहता।

माशा : आप अर्कादिना से रुकने का अनुरोध कीजिये न!

त्रिगोरिन : नहीं, वह अब नहीं रुकेंगी। उनका बेटा बड़ी बेहूदगी दिखा रहा है। पहले उसने अपने को गोली मार ली और अब सुनने में आ रहा है कि मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती देना चाहता है। भला किसलिये? वह मुंह फुलाये रहता है, फूं-फां करता है और नये कला-रूपों का राग अलापता है... लेकिन नये-पुराने – सभी के लिये जगह है। लड़ने-झगड़ने की क्या ज़रूरत है?

माशा : ईर्ष्या की भावना भी तो है। ख़ैर, मुझे इस मामले से कुछ लेना-देना नहीं।

(**ख़ामोशी।**
सूटकेस लिये हुए याकोव बायें से दायें जाता है। नीना आती है और खिड़की के पास रुक जाती है)

वह अध्यापक बहुत समझदार तो नहीं, मगर दयालु और ग़रीब आदमी है तथा मुझे बहुत चाहता है। मुझे उस पर दया आती है। और उसकी बूढ़ी मां पर भी रहम आता है। तो मैं आपके लिये शुभकामनायें करती हूं। मेरे बारे में कुछ बुरा नहीं सोचिये। (**तपाक से हाथ मिलाती है**) आपकी आत्मीयता के लिये मैं

आपकी बहुत आभारी हूं। मुझे अपनी किताबें ज़रूर भेजिये और सो भी अपने हस्ताक्षर करके। हां, "आदरणीया" नहीं लिखिये, बस इतना ही लिख भेजिये – "मारीया को, जिसका कोई नहीं और जो न जाने किसलिये इस दुनिया में रह रही है!" तो नमस्ते! (**जाती है**)

नीना (त्रिगोरिन की ओर बन्द मुट्ठी बढ़ाते हुए): दो या एक?

त्रिगोरिन: दो।

नीना (आह भरकर): नहीं। मेरी मुट्ठी में मटर का सिर्फ़ एक ही दाना है। मैं यह नजूम लगा रही थी – मैं अभिनेत्री बनूं या न बनूं? काश, कोई सलाह ही दे।

त्रिगोरिन: इस मामले में सलाह नहीं दी जा सकती।

(**ख़ामोशी**)

नीना: हम अब बिछुड़ रहे हैं और... शायद फिर कभी न मिलें। कृपया निशानी के तौर पर यह छोटा-सा लॉकेट स्वीकार कर लें। मैंने इस पर आपके नाम के पहले अक्षर खुदवाये हैं और दूसरी ओर आपकी किताब का नाम – 'दिन और रातें।'

त्रिगोरिन: कितना प्यारा है यह! (**लॉकेट को चूमता है**) बहुत बढ़िया उपहार है।

नीना: कभी-कभी मुझे याद कर लीजियेगा।

त्रिगोरिन: मैं आपको याद करूंगा। मैं आपको याद करूंगा उस रूप में जैसी आप एक सप्ताह पहले उस उजले दिन को लग रही थीं। याद है न? हल्के-से रंग का फ़्राक पहने हुए... हम बातें करते रहे थे... और बेंच पर पड़ी हुई थी सफ़ेद गंगा-चिल्ली।

नीना (सोचते हुए) : हां, गंगाचिल्ली ...

(ख़ामोशी)

हम अब और बातें नहीं कर सकते, लोग इधर आ रहे हैं... जाने से पहले मुझे दो मिनट देने की मेहरबानी कीजियेगा, मिन्नत करती हूं ... **(बायीं ओर से बाहर जाती है)**

(इसी समय दायीं ओर से अर्कादिना, सितारा लगा टेल-कोट पहने सोरिन और इनके पीछे सामान बांधने की चिन्ता में खोया हुआ याकोव आता है)

अर्कादिना : मेरे बूढ़े भैया, तुम नहीं जाओ। तुम्हारे गठिया के साथ कहीं आने-जाने में क्या तुक है? **(त्रिगोरिन से)** अभी कौन यहां से बाहर गया है? नीना?

त्रिगोरिन : हां।

अर्कादिना : माफ़ी चाहती हूं, हमने बाधा डाल दी ... **(बैठती है)** लगता है कि सारा सामान बंध गया। मैं तो बुरी तरह थक गयी हूं।

त्रिगोरिन (लॉकेट पर पढ़ता है) : 'दिन और रातें' पृष्ठ १२१, ११वीं और १२वीं पंक्तियां।

याकोव (मेज़ साफ़ करते हुए) : आपकी बंसियां भी बांध दूं?

त्रिगोरिन : हां, उनकी तो मुझे ज़रूरत पड़ेगी। लेकिन किताबें किसी को दे दो।

याकोव : जो हुक्म।

त्रिगोरिन (स्वगत) : पृष्ठ १२१, ११वीं और १२वीं पंक्तियां। क्या होगा इन पंक्तियों में? **(अर्कादिना से)** यहां घर में

मेरी किताबें हैं?

अर्कादिना : भैया की बैठक की कोनेवाली अलमारी में।

त्रिगोरिन : पृष्ठ १२१... (**जाता है**)

अर्कादिना : पेत्रूशा, सच, तुम्हें तो घर पर ही रहना चाहिये...

सोरिन : तुम लोग तो जा रहे हो और तुम्हारे बिना यह घर मुझे काटने को दौड़ेगा।

अर्कादिना : और शहर में क्या रखा है?

सोरिन : कुछ ख़ास नहीं, लेकिन फिर भी... (**हंसता है**) नगरपालिका भवन का शिलान्यास होगा और ऐसी ही कुछ दूसरी बातें भी... कुछ देर को यहां के नीरस जीवन से पिंड छुड़ाने को मन होता है। पुराने सिगरेट-होल्डर की तरह एक ही जगह पड़े-पड़े मन दुखी हो गया है। मैंने दिन के एक बजे बग्घी लाने को कह दिया है, साथ ही चलेंगे।

अर्कादिना (थोड़ा रुककर) : भैया, तुम यहीं रहो, न तो ऊबना और न ठण्ड खाना। मेरे बेटे की चिन्ता करो। उसे सहेजो। उसकी सरपरस्ती करो।

(**ख़ामोशी**)

मैं आज चली जाऊंगी और यह नहीं जान पाऊंगी कि कोन्स्तान्तीन ने किस कारण अपने को गोली मारी। मुझे लगता है कि मुख्य कारण ईर्ष्या ही था और इसलिये मैं जितनी भी जल्दी त्रिगोरिन को यहां से ले जाती हूं, उतना ही अच्छा है।

सोरिन : मैं तुमसे क्या कहूं? कारण तो और भी थे। बात बड़ी सीधी-सादी है—वह नौजवान है, समझदार है, शहर से दूर गांव में रहता है, उसके पास न पैसा है, न समाज में कोई मान-सम्मान, न उसका कोई भविष्य है। कोई काम-काज

नहीं। अपनी काहिली से उसे शर्म आती है और वह उसकी वजह से घबराहट महसूस करता है। मैं उसे बहुत प्यार करता हूं और वह भी मुझे चाहता है। फिर भी उसे लगता है कि वह घर में फालतू है, कि वह यहां टुकड़खोर है, दूसरों के सिर पर बोझ बना हुआ है। यह समझना मुश्किल नहीं, उसमें भी आत्म-सम्मान है...

अर्कादिना: मेरे लिये वह एक बड़ी परेशानी बना हुआ है! (**सोचते हुए**) वह कोई नौकरी करने लगे तो कैसा रहे...

सोरिन (सीटी बजाता है और फिर कुछ अनिश्चित ढंग से): मुझे लगता है, सबसे अच्छा तो यही होगा कि तुम... उसे कुछ पैसे दे दो। पहला काम तो उसे यह करना चाहिये कि भले लोगों की तरह ओढ़े-पहने। उसे देखो तो, तीन साल से वही एक फ़ाक-कोट पहन रहा है, ओवरकोट उसके पास है ही नहीं... (**हंसता है**) और थोड़ा-सा सैर-सपाटा भी उसके लिये बुरा नहीं रहेगा... शायद विदेश घूम आये... यह तो कोई बहुत ख़र्च वाला मामला नहीं।

अर्कादिना: ख़ैर... सूट के लिये तो शायद मैं किसी तरह पैसे दे भी सकती हूं, मगर विदेश जाने के लिये... नहीं, इस वक़्त तो मैं सूट के लिये भी पैसे नहीं दे सकती। (**दृढ़ता से**) मेरे पास पैसे नहीं हैं!

(सोरिन हंसता है)

नहीं हैं पैसे मेरे पास।

सोरिन (सीटी बजाता है): तो यह बात है। क्षमा चाहता हूं प्यारी बहन, बुरा नहीं मानो। मैं तुम पर विश्वास करता हूं... तुम उदारमना, दयालु महिला हो।

अर्कादिना (रोते हुए) : नहीं हैं मेरे पास पैसे !

सोरिन : ज़ाहिर है कि अगर मेरे पास पैसे होते तो मैं खुद ही उसे दे देता। लेकिन मेरे पास तो एक दमड़ी भी नहीं। **(हंसता है)** मेरी सारी पेंशन को तो कारिन्दा ले जाता है और खेतीबाड़ी, ढोर-डंगर और शहद की मक्खियां पालने पर लगा देता है। सारा पैसा बरबाद होता रहता है। शहद की मक्खियां मर जाती हैं, ढोर-डंगर मर जाते हैं और बग्घी के लिये घोड़े भी मुझे कभी नहीं मिलते...

अर्कादिना : हां, मेरे पास पैसे तो हैं, लेकिन मैं कलाकार हूं। पोशाकों में ही मेरा दीवाला निकल जाता है।

सोरिन : तुम दयालु हो, बहुत अच्छी हो... मैं बड़ी इज़्ज़त करता हूं तुम्हारी... हां... लेकिन फिर से मुझे कुछ हो रहा है। **(लड़खड़ाता है)** सिर चकरा रहा है। **(मेज़ थाम लेता है)** मेरी तबीयत बहुत ख़राब हो रही है।

अर्कादिना (घबराकर) : पेत्रूशा ! **(उसे सहारा देने की कोशिश करते हुए)** पेत्रूशा, मेरे प्यारे भैया... **(पुकारती है)** मदद कीजिये ! जल्दी से मदद कीजिये !

(सिर पर पट्टी बांधे त्रेप्लेव और मेद्वेदेन्को आते हैं)

भैया की तबीयत बहुत ख़राब हो रही है !

सोरिन : नहीं, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं... **(मुस्कराता और पानी पीता है)** तबीयत सम्भल गयी है... सब ठीक है

त्रेप्लेव (मां से) : अम्मां, घबराने की कोई बात नहीं, कोई ख़तरा नहीं। मामा को अब अक्सर ऐसे दौरे आते रहते हैं। **(मामा से)** मामा जी, आपको आराम करना चाहिये।

सोरिन: हां, थोड़ी देर के लिये... लेकिन शहर तो मैं जाऊंगा ही... थोड़ी देर लेटने के बाद जाऊंगा... बात साफ़ है... **(छड़ी का सहारा लेकर चलता है)**

मेद्वेदेन्को (हाथ थामकर उसे ले जाता है): एक पहेली है... सुबह को चार पैरों पर, दोपहर को दो पर, शाम को तीन पर...

सोरिन (हंसता है): एकदम ठीक है! और रात को पीठ पर। शुक्रिया, अब मैं खुद जा सकता हूं।

मेद्वेदेन्को: लीजिये, तकल्लुफ़ के फेर में पड़ गये!..

(वह और सोरिन जाते हैं)

अर्कादिना: उफ़, भैया ने मुझे कैसे डरा दिया!

त्रेप्लेव: मामा के लिये गांव में रहना ठीक नहीं। वह यहां उदास होते रहते हैं। अम्मां, अगर तुम अचानक दरियादिल हो जाओ और मामा जी को डेढ़-दो हज़ार रूबल उधार दे दो तो उनके लिये साल भर शहर में रहना सम्भव हो सके।

अर्कादिना: मेरे पास पैसे नहीं हैं। मैं अभिनेत्री हूं, महाजन नहीं।

(ख़ामोशी)

त्रेप्लेव: अम्मां, मेरी पट्टी बदल दो। तुम, यह काम अच्छी तरह से करती हो।

अर्कादिना (दवाइयों की अलमारी से आयोडीन और पट्टी करने का सामान निकालती है): डाक्टर ने तो देर कर दी।

त्रप्लेव: दस बजे आने को कहा था और अब दोपहर हो गयी।

अर्कादिना : बैठो। (**बेटे के सिर से पट्टी उतारती है**) तुम तो मानो पगड़ी बांधे हुए लगते हो। कल बाहर से आनेवाले एक आदमी ने पूछा था कि तुम किस जाति के हो। तुम्हारा घाव तो लगभग भर गया। बस, बहुत थोड़ा ही रह गया। (**उसका सिर चूमती है**) मेरे पीछे तो तुम गोली-वोली नहीं चलाओगे न?

त्रेप्लेव : नहीं अम्मां। वह तो भयानक हताशा का ऐसा क्षण था जब मैं अपना सन्तुलन खो बैठा था। अब आगे कभी ऐसा नहीं होगा। (**उसका हाथ चूमता है**) तुम्हारे हाथों में जादू है। मुझे याद है, बहुत साल पहले, जब तुम सरकारी थियेटर में ही काम करती थीं—मैं तब छोटा-सा था—हमारे अहाते में मार-पीट हो गयी थी, एक किरायेदार धोबिन की बुरी तरह पिटाई कर दी गयी थी। तुम्हें याद है? उसे बेहोशी की हालत में उठाकर ले जाया गया था ... तुम उसकी बहुत देखभाल करती रही थीं, उसे दवाई देती थीं और उसके बच्चों को एक टब में नहलाया करती थीं। तुम्हें याद नहीं?

अर्कादिना : नहीं। (**नयी पट्टी बांधती है**)

त्रेप्लेव : उसी घर में जहां हम रहते थे, दो बैले-नतर्कियां भी रहती थीं ... वे तुम्हारे पास कॉफ़ी पीने आया करती थीं ...

अर्कादिना : यह याद है।

त्रेप्लेव : बड़ी भक्त-सी थीं दोनों।

(**ख़ामोशी**)

पिछले कुछ समय से, ख़ास तौर पर इन दिनों में मेरे दिल में तुम्हारे लिये बचपन जैसा ही सच्चा और कोमल प्यार उमड़ रहा है। तुम्हारे सिवा अब इस दुनिया में मेरा है ही कौन? लेकिन तुम किसलिये, किसलिये इस आदमी के फेर में पड़ी हुई हो?

अर्कादिना : तुम उसे समझते नहीं हो, कोन्स्तान्तीन। बहुत ही उच्चादर्शों का व्यक्ति है यह ...

त्रेप्लेव : लेकिन जैसे ही उसे यह बताया गया कि मैं उसको द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती देने जा रहा हूं, उसके उच्चादर्शों ने कायरता का रूप धारण करने में देर नहीं लगायी। वह अब जा रहा है। दुम दबाकर भाग रहा है!

अर्कादिना : यह सब बकवास है! मैं ख़ुद ही उसे यहां से जाने को कह रही हूं।

त्रेप्लेव : उच्चादर्शों का व्यक्ति! उसी के कारण हम लगभग एक-दूसरे से लड़-झगड़ रहे हैं, जबकि वह दीवानख़ाने या बाग़ में कहीं बैठा हुआ हम पर हंस रहा होगा ... वह नीना को उलटे चक्कर में डाल रहा है, उसे पूरी तरह यक़ीन दिलाना चाहता है कि वह बहुत बड़ी विभूति है।

अर्कादिना : मुझसे जली-कटी कहने में तुम्हें मज़ा आता है। इस आदमी के लिये मेरे मन में बड़ी इज़्ज़त है और मैं तुमसे अनुरोध करती हूं कि मेरे सामने तुम उसके बारे में भला-बुरा नहीं कहो।

त्रेप्लेव : मगर मैं उसकी इज़्ज़त नहीं करता। तुम चाहती हो कि मैं भी उसे विभूति मानूं किन्तु क्षमा चाहता हूं, झूठ बोलने का फ़न मुझे नहीं आता और उसकी कृतियों से मुझे उबकाई आती है।

अर्कादिना : यह जलन है। प्रतिभाहीन, किन्तु बड़े-बड़े दावे करनेवाले लोगों के लिये सच्ची प्रतिभाओं पर कीचड़ उछालने के सिवा कुछ नहीं रह जाता। उन्हें इसी से सन्तोष मिलता है।

त्रेप्लेव (व्यंग्यपूर्वक) : सच्ची प्रतिभायें! **(ग़ुस्से से)** अगर तुम जानना ही चाहती हो तो सुन लो, मैं तुम सभी से ज़्यादा प्रतिभाशाली हूं! **(सिर से पट्टी उतार फेंकता है)** तुम लकीर

के फ़क़ीर, तुम लोग कला-क्षेत्र में पहले घुस आये और केवल उसी को उचित तथा सच मानते हो जो ख़ुद करते हो। बाक़ी सब कुछ को रौंदते हो, कुचलते हो! मैं तुम लोगों को कोई मान्यता नहीं देता! न तुम्हें, न उसे!

अर्कादिना: ह्रासोन्मुख!..

त्रेप्लेव: तुम जाओ अपने उस प्यारे थियेटर में और घटिया तथा उलटे-सीधे नाटकों में अभिनय करो!

अर्कादिना: मैंने कभी ऐसे नाटकों में अभिनय नहीं किया। मेरा पिंड छोड़ो! तुम तो मामूली-सा प्रहसन भी नहीं लिख सकते। कीयेव का टुटपुंजिया! टुकड़ख़ोर।

त्रेप्लेव: कंजूस, मक्खी चूस!

अर्कादिना: भिखारी!

(त्रेप्लेव बैठकर धीरे-धीरे रोता है)

तुम हो किस खेत की मूली! (**परेशानी से इधर-अधर आती-जाती है**) रोओ नहीं! रोने की ज़रूरत नहीं... (**ख़ुद रोती है**) नहीं रोओ... (**बेटे का माथा, गाल और सिर चूमती है**) मेरे प्यारे बेटे, मुझे माफ़ कर दो... अपनी इस पापिन मां को क्षमा कर दो। मुझ क़िस्मत की मारी को माफ़ कर दो।

त्रेप्लेव (उसे बांहों में भर लेता है): काश, तुम्हें मालूम होता! मैं सब कुछ गंवा चुका हूं। नीना मुझे प्यार नहीं करती, मैं अब लिख नहीं सकता... मेरी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया...

अर्कादिना: ऐसे हिम्मत नहीं हारो... सब ठीक हो जायेगा। वह अभी यहां से चल देगा, नीना तुम्हें फिर से प्यार करने लगेगी। (**बेटे के आंसू पोंछती है**) बस, काफ़ी है। तो हमारे बीच सुलह हो गयी।

त्रेप्लेव (उसके हाथ चूमता है): हां, अम्मां।

अर्कादिना (प्यार से): तुम उससे भी सुलह कर लो। द्वन्द्व-युद्ध की कोई ज़रूरत नहीं ... **ज़रूरत नहीं है न**?

त्रेप्लेव: अच्छी बात है ... लेकिन, अम्मां, तुम मुझे उससे मिलने को नहीं कहना। मेरे दिल पर बहुत भारी गुज़रेगी ... यह मेरे बस की बात नहीं ... (**त्रिगोरिन आता है**) लो, वह आ गया ... मैं जाता हूं। (**दवा को झटपट अलमारी में रख देता है**) पट्टी अब डाक्टर ही बांधेगा ...

त्रिगोरिन (किताब में ढूंढ़ते हुए): पृष्ठ १२१ ... ११वीं और १२वीं पंक्तियां ... ये रहीं ... (**पढ़ता है**) "अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणों की ज़रूरत पड़े, तो आना और आकर उन्हें ले लेना।"

(त्रेप्लेव फ़र्श से पट्टी उठाकर बाहर जाता है)

अर्कादिना (घड़ी पर नज़र डालकर): जल्द ही बग्घी आ जायेगी।

त्रिगोरिन (स्वगत): अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणों की ज़रूरत पड़े, तो आना और आकर उन्हें ले लेना।

अर्कादिना: मुझे आशा है कि तुम्हारा सारा सामान बंधा हुआ है?

त्रिगोरिन (अधीरता से): हां, हां ... (**सोच में डूबते हुए**) उस निर्मल आत्मा की इस आवाज़ में मुझे क्यों वेदना की ध्वनि सुनाई दी और मेरा हृदय ऐसे कसक उठा ... अगर तुम्हें कभी मेरे प्राणों की ज़रूरत पड़े, तो आना और आकर उन्हें ले लेना! (**अर्कादिना से**) हम एक दिन और रुक जायें!

(अर्कादिना इन्कार करते हुए सिर हिलाती है)

रुक जाते हैं !

अर्कादिना : मेरे प्यारे, मैं जानती हूं कि तुम यहां क्यों रुकना चाहते हो। लेकिन तुम अपने को सम्भालो। तुम मानो नशे में हो, अक़्ल से काम लो।

त्रिगोरिन : तुम भी अक़्ल से काम लो, समझदारी दिखाओ, सूझ-बूझ का परिचय दो। मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूं, इस सारे मामले पर एक सच्चे दोस्त की तरह ग़ौर करो ... (**उसका हाथ दबाता है**) तुम बलिदान कर सकती हो ... अच्छी दोस्ती का सबूत दो, मुझे मुक्त कर दो ...

अर्कादिना (अत्यधिक विह्वलता से) : ऐसे दीवाने हो गये हो तुम ?

त्रिगोरिन : मैं बरबस उसकी ओर खिंचता हूं ! शायद यही वह है जो मुझे चाहिये !

अर्कादिना : देहाती लड़की का प्यार ? ओह, कितना कम तुम ख़ुद को जानते हो।

त्रिगोरिन : कभी-कभी कुछ लोग बात करते-करते सो जाते हैं। मैं भी तुमसे बात कर रहा हूं और ख़ुद मानो सोता हुआ उसे सपने में देख रहा हूं ... बड़े मीठे-मीठे और अद्‌भुत सपनों ने मुझे अपने बस में कर लिया है ... मुक्त कर दो मुझे ...

अर्कादिना (कांपते हुए) : नहीं, नहीं ... मैं एक साधारण नारी हूं, मुझसे ऐसी बातें नहीं कहो ... मुझे यातना नहीं दो, बोरीस ... मेरा दिल बैठा जा रहा है ...

त्रिगोरिन : तुम अगर चाहो तो असाधारण भी बन सकती हो। उठती जवानी के दिनों का, मधुर और काव्यमय प्यार ही, सपने की दुनिया में ले जानेवाला प्यार ही सच्ची ख़ुशी दे

6-912

सकता है! ऐसे प्यार की मुझे अभी तक अनुभूति नहीं हुई... अपनी जवानी के दिनों में मुझे इसकी कभी फ़ुरसत ही नहीं मिली, मैं सम्पादकों के कार्यालयों के ही चक्कर काटता रहा, अभावों-निर्धनता से जूझता रहा... अब आख़िर ऐसा प्यार आया है मेरे जीवन मैं, वह मुझे बुला रहा है... उससे दूर भागने में क्या तुक है?

अर्कादिना (ग़ुस्से से): तुम पागल हो गये हो।

त्रिगोरिन: चलो, ऐसा ही सही।

अर्कादिना: आज तुम सबने मिलकर मुझे सताने की ही कमर कस ली है! (**रोती है**)

त्रिगोरिन (अपना सिर थामकर): तुम नहीं समझतीं! नहीं समझना चाहतीं!

अर्कादिना: क्या मैं इतनी बूढ़ी और बदसूरत हो गयी हूं कि किसी तरह की शर्म-हया के बिना तुम मेरे सामने दूसरी औरतों की चर्चा करते हो? (**त्रिगोरिन का आलिंगन करती और चुम्बन लेती है**) ओह, तुम मेरे पगले! मेरे अनूठे, अद्भुत... तुम तो मेरे जीवन के अन्तिम अध्याय हो! (**घुटनों के बल हो जाती है**) मेरी ख़ुशी, मेरे गौरव, मेरे परम सुख... (**उसके घुटनों को बांहों में भर लेती है**) अगर तुम मुझे एक घण्टे के लिये भी अपने से अलग कर दोगे तो मैं यह सहन नहीं कर पाऊंगी, पागल हो जाऊंगी, मेरे अनुपम, मेरे वैभव, मेरे दिल के राजा...

त्रिगोरिन: यहां कोई आ सकता है। (**उठने के लिये उसे सहारा देता है**)

अर्कादिना: कोई आता है तो बेशक आ जाये। तुमसे प्यार करने के लिये मेरी नज़रें कभी किसी के सामने नहीं झुकेंगी। (**उसके हाथ चूमती है**) मेरे जीवनधन, मेरे पगले, तुम पागलपन

करना चाहते हो, लेकिन मैं यह नहीं चाहती, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगी ... (**हंसती है**) तुम मेरे हो ... मेरे हो ... यह माथा मेरा है, यह सिर मेरा है और ये सुन्दर, रेशमी बाल मेरे हैं ... तुम पूरी तरह से मेरे हो। तुम इतने प्रतिभाशाली हो, समझदार हो, आज के सभी लेखकों के सिरमौर हो, तुम रूस की एकमात्र आशा हो ... इतनी निश्छलता, इतनी सादगी, इतनी ताज़गी, इतना स्वस्थ हास्य-विनोद है तुममें ... तुम इने-गिने शब्दों में ही किसी के चरित्र के लक्षण या दृश्य को पूरी तरह से उभार सकते हो। तुम्हारे पात्र सजीव होते हैं। ओह, तुम्हारी रचनायें पढ़ते समय मन अपने आप ही आनन्द-विभोर हो उठता है! तुम समझते हो कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बात कर रही हूं? मैं झूठ बोल रही हूं? मुझसे नज़रें मिलाओ तो ... देखो मेरी आंखों में ... क्या मैं तुम्हें झूठ बोलती प्रतीत हो रही हूं? देखते हो न, सिर्फ़ मैं ही तुम्हारा मूल्य आंक सकती हूं, केवल मैं ही तुमसे सच्चाई कहती हूं, मेरे प्यारे, मेरे अनुपम, मेरे अनूठे ... चलोगे न? ठीक है न? तुम मुझे नहीं छोड़ोगे न? ...

त्रिगोरिन: मुझमें पक्के इरादे जैसी कोई चीज़ नहीं ... कभी भी कोई ऐसी चीज़ नहीं थी ... हमेशा बुझा-बुझा-सा, मरा-मरा-सा, हमेशा दूसरों के इशारों पर नाचनेवाला – क्या यह किसी औरत को अच्छा लग सकता है? तुम मुझे सहारा देकर अपने साथ ले चलो, लेकिन अपने से एक क़दम भी दूर नहीं होने दो ...

अर्कादिना (**स्वगत**): अब यह मेरा है। (**ऐसी बेतकल्लुफ़ी से मानो कुछ भी न हुआ हो**) वैसे अगर तुम चाहते हो तो रुक भी सकते हो। मैं अकेली चली जाऊंगी और तुम बाद में, कोई एक हफ़्ते बाद आ जाना। सचमुच तुम्हें उतावली भी किस-लिये करनी है?

त्रिगोरिन : नहीं, हम एकसाथ ही चलेंगे।

अर्कादिना : जैसे चाहो। साथ तो साथ ही सही ...

(ख़ामोशी।
त्रिगोरिन किताब में कुछ लिखता है)

क्या लिख रहे हो?

त्रिगोरिन : आज सुबह एक अच्छा वाक्य सुनने को मिला – "ललना का उपवन" ... कहीं काम आ जायेगा। (**अंगड़ाई लेता है**) तो हमें चलना है? फिर से रेल के डिब्बे, फिर से स्टेशन, केंटीन, कटलेट, बातचीत ...

शाम्रायेव (प्रवेश करता है) : बड़े दुखी मन से यह सूचित करता हूं कि बग्घी आ गयी है। आदरणीया जी, स्टेशन पर चलने का वक़्त हो गया, गाड़ी दो बजकर पांच मिनट पर आती है। तो इरीना निकोलायेव्ना, मेहरबानी कीजिये और यह मालूम करना नहीं भूलिये कि अभिनेता सूज़दालत्सेव अब कहां है? वह ज़िन्दा है? सही-सलामत है? कभी तो हम साथ-साथ जाम चढ़ाते थे ... 'लुटा डाकख़ाना' में वह बेजोड़ अभिनय करता था ... मुझे याद है कि उस समय येलीसावेतग्राद में उसके साथ इज़्माइलोव नाम का अभिनेता ट्रेजिक अभिनय करता था। वह भी ग़ज़ब का एक्टर था ... आप जल्दी नहीं करें, आदरणीया, पांच मिनट और रुका जा सकता है। एक बार एक मेलोड्रामा में वे दोनों जालसाज़ों का अभिनय कर रहे थे और जब दोनों अचानक पकड़ लिये गये तो यह वाक्य कहा जाना चाहिये था: "हम फंस गये जाल में", लेकिन इज़्माइलोव ने कहा: "हम धंस गये ताल में" ... (**हंसता है**) ताल में!

(कारिन्दा जब तक बात करता रहता है, याकोव सूटकेसों के

आस-पास व्यस्त दिखाई देता है। नौकरानी अर्कादिना की टोपी, कोट, छतरी और दस्ताने लाती है। इन्हें पहनने में सभी अर्कादिना की मदद करते हैं। बायीं ओर के दरवाज़े से बावर्ची भीतर झांकता है, कुछ रुककर झेंपता हुआ भीतर आता है। पोलीना अन्द्रेयेव्ना और बाद में सोरिन तथा मेद्वेदेन्को आते हैं)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (डलिया लिये हुए): रास्ते के लिये ये आलूबुखार लायी हूं ... बहुत ही मीठे हैं ... शायद कोई मज़ेदार चीज़ खाने को आपका मन हो आये ...

अर्कादिना: आप बहुत दयालु हैं, पोलीना अन्द्रेयेव्ना।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: विदा, मेरी प्यारी! अगर आपके मन को कुछ अच्छा न लगा हो तो क्षमा कीजिये। **(रोती है)**

अर्कादिना (उसे गले लगाती है): सब कुछ अच्छा रहा, सब कुछ अच्छा रहा। बस, ये आंसू नहीं बहायें।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: हम तो बुढ़ाते जा रहे हैं।

अर्कादिना: इस पर किसी का वश भी तो नहीं।

सोरिन (ओवरकोट पहने और शॉल लपेटे, टोप ओढ़े, छड़ी लिये हुए बायें दरवाज़े से बाहर निकलता है, सारा कमरा लांघता है): बहन, चलने का वक़्त हो गया। कहीं तुम्हें देर ही न हो जाये। मैं तो बग्घी में बैठने जा रहा हूं। **(जाता है)**

मेद्वेदेन्को: और मैं विदा करने को पैदल स्टेशन पर जाता हूं ... अभी फ़ुर्ती से ... **(जाता है)**

अर्कादिना: अलविदा मेरे प्यारो ... अगर ज़िन्दा और ठीक-ठाक रहे तो अगली गर्मियों में फिर मिलेंगे ...

(नौकरानी, याकोव और बावर्ची उसका हाथ चूमते हैं)

मुझे भूल नहीं जाना। (**बावर्ची को एक रूबल देती है**) तुम तीनों के लिये यह रूबल है।

बावर्ची: बहुत बहुत धन्यवाद, मालकिन। आपकी यात्रा शुभ रहे। बहुत मेहरबानी आपकी!

याकोव: भगवान आपको सदा सुखी रखे!

शाम्रायेव: पत्र लिखने की कृपा कीजिये, पढ़कर ख़ुशी होगी। तो नमस्ते, बोरीस अलेक्सेयेविच!

अर्कादिना: कोन्स्तान्तीन कहां है? उससे कहिये कि मैं जा रही हूं। जाने से पहले बेटे से मिलना तो चाहिये। मेरे बारे में कुछ बुरा नहीं सोचियेगा। (**याकोव से**) मैंने बावर्ची को एक रूबल दे दिया है। वह तुम तीनों के लिये है।

(सभी दायीं ओर जाते हैं। मंच ख़ाली रह जाता है। मंच के पीछे ऐसा शोर सुनाई देता है जैसा कि किसी को विदा करने के समय होता है। नौकरानी मेज़ से आलूबुख़ारों की डलिया उठाने के लिये आती है और फिर से बाहर जाती है)

त्रिगोरिन (लौटता है): मैं अपनी छड़ी तो भूल ही गया। लगता है कि वह बरामदे में रह गयी है।

(जाता है और बायें दरवाज़े के पास नीना से उसकी भेंट होती है जो अन्दर आती है)

अरे, आप? हम लोग जा रहे हैं।

नीना: मेरा मन कह रहा था कि हमारी फिर भेंट होगी। (**भावावेश में**) बोरीस अलेक्सेयेविच, मैंने पक्का इरादा बना लिया है, पासा फेंका जा चुका है, मैं अभिनेत्री बनने जा रही

हूं। कल मैं यहां से चली जाऊंगी, अपने पिता को छोड़ रही हूं, सब कुछ से नाता तोड़ रही हूं, नयी ज़िन्दगी शुरू कर रही हूं... आपकी तरह मैं भी जा रही हूं... मास्को। हम वहां मिलेंगे।

त्रिगोरिन (इधर-उधर देखकर): 'स्लाव्यान्स्की बाज़ार' होटल में ठहरिये... फ़ौरन मुझे अपने आने की ख़बर दीजिये... मोल्चानोव्का सड़क, ग्रोख़ोल्स्की का मकान... मैं अब जल्दी में हूं...

(ख़ामोशी)

नीना: एक मिनट और रुक जाइये...

त्रिगोरिन (धीमे-धीमे): कितनी सुन्दर हैं आप... ओह, यह सोचकर मन को कितनी ख़ुशी होती है कि हम लोग जल्द ही फिर मिलेंगे!

(नीना उसकी छाती पर अपना सिर रख देती है)

मैं फिर से देखूंगा इन सुन्दर आंखों को, इस प्यारी-प्यारी, मधुर मुस्कान को जिसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता... इस विनम्र मुखड़े को, फ़रिश्ते जैसी पवित्रता की इस छाप को। मेरी प्यारी...

(ज़ोरदार, लम्बा चुम्बन)

(परदा गिरता है)

(तीसरे और चौथे अंकों के बीच दो साल का अन्तर)

चौथा अंक

(सोरिन के घर का एक दीवानख़ाना जिसे कोन्स्तान्तीन त्रेप्लेव ने अपना अध्ययन-कक्ष बना लिया है। दायें-बायें दरवाज़े, जो भीतर के कमरों में खुलते हैं। सामने बरामदे में खुलनेवाला शीशे का दरवाज़ा। दीवानख़ाने के आम फ़र्नीचर के अलावा दायें कोने में लिखने की मेज़ है, बायीं ओर के दरवाज़े के पास सोफ़ा, किताबों से भरी अलमारी है, कुर्सियों और खिड़कियों पर किताबें रखी हैं। सन्ध्या का समय। शेडवाला एक ही लैम्प जल रहा है। हल्की-हल्की रोशनी। पेड़ों के सरसराने और चिमनियों में हवा के शोर मचाने की आवाज़ सुनाई दे रही है। चौकीदार डंडा बजा रहा है। मेद्वेदेन्को और माशा आते हैं।)

माशा (पुकारती है): कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच! कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच! **(इधर-उधर देखते हुए)** यहां तो कोई नहीं। बुड्ढा हर क्षण यही पूछता रहता है कि कोस्त्या कहां है, कोस्त्या कहां है... उसके बिना तो उसे चैन ही नहीं पड़ता...

मेद्वेदेनको: एकाकीपन से डरता है। **(कान लगाकर सुनते हुए)** कैसा बेहूदा मौसम है! दो दिन से यही हाल चल रहा है।

माशा (लैम्प की बत्ती ऊपर करती है): झील में लहरें उठ रही हैं। बहुत बड़ी-बड़ी लहरें।

मेद्वेदेन्को: बाग़ में अंधेरा है। बाग़ में उस थियेटर को तोड़ देने के लिये कहना चाहिये। हड्डियों के ढांचे की तरह नंगा और भयानक-सा खड़ा है। उसके परदे भी हवा में फड़फड़ाते रहते हैं। कल शाम को जब मैं उसके पास से गुज़र रहा था तो मुझे लगा कि उसमें कोई रो रहा है।

माशा: अच्छा...

(**ख़ामोशी**)

मेद्वेदेन्को : माशा, आओ, घर चलें !

माशा (इन्कार करते हुए सिर हिलाती है) : मैं तो यहीं सोऊंगी।

मेद्वेदेन्को (मिन्नत करते हुए) : माशा, चलो भी ! हमारा बच्चा तो शायद भूखा होगा।

माशा : कोई बात नहीं। मात्र्योना उसे खिला-पिला देगी।

(**ख़ामोशी**)

मेद्वेदेन्को : बच्चे पर रहम आता है। तीन दिन से मां के बिना है।

माशा : तुम तो बड़े नीरस हो गये हो। पहले तो कभी फ़लसफ़ा ही बघार लेते थे, लेकिन अब बच्चे और घर, बच्चे और घर की ही रट लगाये रहते हो – कुछ और तो सुनने को मिलता ही नहीं।

मेद्वेदेन्को : चलो न, माशा !

माशा : ख़ुद चले जाओ।

मेद्वेदेन्को : तुम्हारे बापू मुझे बग्घी नहीं देंगे।

माशा : दे देंगे। तुम मांग लो, वह दे देंगे।

मेद्वेदेन्को : अच्छी बात है – मांग लूंगा। तो तुम कल आ जाओगी ?

माशा (नसवार की चुटकी सूंघती है) : हां, आ जाऊंगी कल। तुम तो मेरे पीछे ही पड़ गये हो ...

(त्रेप्लेव और पोलीना अन्द्रेयेव्ना आते हैं। त्रेप्लेव तकिया और कम्बल लिये हुए है तथा पोलीना अन्द्रेयेव्ना चादर और ग़िलाफ़ आदि। वे इन चीज़ों को सोफ़े पर रख देते हैं और इसके बाद

त्रेप्लेव अपनी मेज़ के सामने जा बैठता है)

अम्मां, यह सब किसलिये है?

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : प्योत्र निकोलायेविच ने यह अनुरोध किया है कि उनका बिस्तर कोस्त्या के कमरे में ही बिछा दिया जाये।

माशा : लाइये, मैं बिछा देती हूं... (**बिस्तर बिछाती है**)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (आह भरकर) : बूढ़े और बच्चे एक जैसे होते हैं... (**लिखने की मेज़ के पास जाती है और उस पर कोहनी टिकाकर पाण्डुलिपि को देखती है**)

(ख़ामोशी)

मेद्वेदेन्को : तो मैं जाता हूं। नमस्ते, माशा। (**बीवी का हाथ चूमता है**) नमस्ते, अम्मां। (**सास का हाथ चूमना चाहता है**)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (झल्लाहट से) : बस, ठीक है! जाओ, भैया!

मेद्वेदेन्को : नमस्ते, कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच।

(त्रेप्लेव चुपचाप हाथ मिलाता है। मेद्वेदेन्को जाता है)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (पाण्डुलिपि को देखते हुए) : किसी ने भी ऐसा सोचा और यह कल्पना नहीं की थी कि कोस्त्या आप सचमुच लेखक बन जायेंगे। भला हो भगवान का, अब तो पत्र-पत्रिकाओं से आपको पैसे भी मिलने लगे हैं। (**उसके बालों पर हाथ फेरती है**) और सुन्दर भी हो गये हैं... प्यारे, अच्छे कोस्त्या, मेरी माशा के साथ ज़रा प्यार से पेश आया करें! ...

माशा (बिस्तर बिछाते हुए) : अम्मां, इन्हें परेशान नहीं करें।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (त्रेप्लेव से) : यह बहुत भली लड़की है।

(ख़ामोशी)

कोस्त्या, औरत को कुछ नहीं चाहिये, सिर्फ़ प्यार की नज़र। मैं यह अपने तजरबे से जानती हूं।

(त्रेप्लेव मेज़ से उठकर चुपचाप बाहर चला जाता है)

माशा : बस नाराज़ कर दिया न! तंग करना ज़रूरी था न!

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : तुम पर तरस आता है मुझे, मेरी प्यारी माशा।

माशा : जैसे कि किसी को बड़ी ज़रूरत है इसकी!

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : मेरा दिल टीसता है तुम्हारे लिये। मुझसे तो कुछ भी छिपा नहीं, मैं सब कुछ समझती हूं।

माशा : सब बकवास है। किसी प्रकार की आशा के बिना प्यार करते जाना – यह केवल उपन्यासों में होता है। सब फ़ुज़ूल की बातें हैं। आदमी को सिर्फ़ अपने दिल की लगाम ढीली नहीं छोड़नी चाहिये, इन्तज़ार नहीं करना चाहिये, मौसम की सनकों की ओर नहीं देखते रहना चाहिये... अगर दिल में प्यार का अंकुर फूट ही पड़ा है तो उसे उखाड़ फेंकना चाहिये। मेरे पति का दूसरे इलाक़े में तबादला करने का वादा किया जा रहा है। वहां पहुंचते ही मैं सब कुछ भूल जाऊंगी, जड़ से निकाल फेंकूंगी इस प्यार को दिल से।

(दो कमरों के पार वाल्ज़ की उदास-सी धुन सुनाई देती है)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : कोस्त्या पियानो बजा रहा है। मतलब यह कि उदास है उसका मन।

माशा (वाल्ज़ की धुन के साथ धीरे-धीरे दो-तीन चक्कर

काटती है) : सबसे बड़ी बात तो यह है अम्मां कि वह आंखों के सामने न रहे जिसे हम प्यार करते हैं। मेरे सेम्योन का बस, तबादला हो जाये और वहां मैं एक महीने में इन्हें भूल जाऊंगी। यह सब ठीक हो जायेगा।

(बायीं ओर का दरवाज़ा खुलता है, दोर्न और मेद्वेदेन्को सोरिन की कुर्सी को ठेलते हुए लाते हैं)

मेद्वेदेन्को : मेरे घर में अब छः प्राणी हैं। और आटे का भाव है सात कोपेक किलो।

दोर्न : बस, इसी उधेड़-बुन में पड़े रहिये।

मेद्वेदेन्को : आप तो मज़ाक़ उड़ायेंगे ही। आपके पास तो बेहिसाब पैसा है।

दोर्न : पैसा ? मेरे दोस्त, तीस साल तक डाक्टरी करने, बेहद परेशानी उठाने और दिन को दिन तथा रात को रात न जानने के बाद सिर्फ़ दो हज़ार रूबल जमा कर पाया था और वह भी जब कुछ समय पहले विदेश गया तो वहां उड़ा दिये। हाथ-पल्ले कुछ भी नहीं।

माशा (पति से) : तुम गये नहीं ?

मेद्वेदेन्को (अपराधी की भांति) : कैसे जाता ? सवारी तो कोई देता नहीं।

माशा (कटुतापूर्ण खीझ से, दबी आवाज़ में) : फूटी आंखों नहीं सुहाते तुम मुझे !

(कुर्सी कमरे के बायीं तरफ़वाले भाग में रोक दी जाती है। पोलीना अन्द्रेयेव्ना, माशा और दोर्न उसके पास बैठ जाते हैं, जबकि दुखी-सा मेद्वेदेन्को एक ओर को हट जाता है)

दोर्न: आपके यहां तो कितना कुछ बदल गया है! दीवानख़ाने को अध्ययन-कक्ष बना दिया गया है।

माशा: कोन्स्तान्तीन ग०रीलोविच के लिये यहां काम करना अधिक सुविधाजनक रहता है। वह किसी भी समय बाग़ में जाकर चिन्तन कर सकते हैं।

(चौकीदार डंडे से आवाज़ करता है)

सोरिन: बहन कहां है?

दोर्न: त्रिगोरिन को लिवाने स्टेशन पर गयी हैं। अभी लौट आयेंगी।

सोरिन: अगर आपने मेरी बहन को भी यहां बुलवा लिया है तो इसका मतलब यह हुआ कि मेरी बीमारी बहुत ख़तरनाक है। **(कुछ क्षण चुप रहकर)** यह भी ख़ूब क़िस्सा है कि मैं सख़्त बीमार हूं और मुझे कोई भी दवा-दारू नहीं दी जाती।

दोर्न: आप कौन-सी दवा चाहते हैं? मन को शान्त करनेवाली बूंदें? सोडा? कुनैन?

सोरिन: लो, फ़लसफ़ा शुरू होता है। ओह, यह भी क्या मुसीबत है! **(सोफ़े की तरफ़ सिर से इशारा करके)** यह बिस्तर मेरे लिये ही है क्या?

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: हां, आपके लिये, प्योत्र निकोलायेविच!

सोरिन: धन्यवाद।

दोर्न (गुनगुनाता है): "तैर रहा है नभ में चांद ..."

सोरिन: मैं कोस्त्या को एक उपन्यासिका के लिये विषय देना चाहता हूं। उसका शीर्षक होना चाहिये: "अरमान पूरे न हुए"। जवानी के दिनों में मैंने लेखक बनना चाहा, लेकिन बन नहीं सका। बढ़िया वक्ता बन जाऊं–ऐसा चाहा, मगर

बोलता था तो ऐसे भद्दे ढंग से कि पूछो नहीं (**अपनी नक़ल उतारता है**): "और यह सब, यह सब कुछ, वह, वह नहीं..." और ऐसा भी हुआ कि जब मैं अपने शब्दों का सारांश निकालने लगता तो पसीने से तर-ब-तर हो जाता। शादी करनी चाही, मगर नहीं कर सका। हमेशा शहर में रहना चाहा, लेकिन गांव में अपनी ज़िन्दगी ख़त्म कर रहा हूं।

दोर्न: काउंसलर आफ़ स्टेट बनना चाहा और बन गया।

सोरिन (**हंसता है**): इसके लिये मैंने कोई कोशिश नहीं की। यह तो अपने आप ही हो गया।

दोर्न: बासठ साल की उम्र में ज़िन्दगी से असन्तोष प्रकट करना – यह दिल का छोटापन है।

सोरिन: कैसे ज़िद्दी आदमी हैं आप। समझते क्यों नहीं कि जीने को मन चाहता है!

दोर्न: यह छिछोरपन है। प्रकृति के नियमों के अनुसार हर जीवन का अन्त होना ज़रूरी है।

सोरिन: आप तृप्त आदमी की तरह सोचते हैं। आपका पेट भरा हुआ है और इसलिये आप जीवन के प्रति उदासीन हैं, आपको किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन मौत सामने आने पर आपको भी दहशत महसूस होगी।

दोर्न: मौत का भय – यह तो पशु जैसी प्रवृत्ति है – आदमी को इस भय पर विजय पानी चाहिये। शाश्वत जीवन में विश्वास करनेवाले ही सचेतन रूप से मृत्यु से डरते हैं, क्योंकि उन्हें अपने पापों का भय होता है। लेकिन आपके लिये तो ऐसा कुछ नहीं। पहली बात तो यह है कि आप शाश्वत जीवन में आस्था नहीं रखते और दूसरे – आपके पाप भी क्या हो सकते हैं? आपने तो केवल न्याय-विभाग में पच्चीस बरस तक नौकरी की है – यही तो।

सोरिन (हंसता है): अट्ठाइस बरस तक...

(त्रेप्लेव आकर सोरिन के पांवों के निकट रखी छोटी-सी बेंच पर बैठ जाता है। माशा की नज़रें लगातार उसके चेहरे पर जमी रहती हैं)

दोर्न: हम कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच को काम नहीं करने दे रहे हैं।

त्रेप्लेव: नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।

(ख़ामोशी)

मेद्वेदेन्को: डाक्टर साहब, इजाज़त हो तो मैं यह पूछना चाहूंगा कि विदेशों में आपको कौन-सा शहर सबसे ज़्यादा पसन्द आया?

दोर्न: गेनोया।

त्रेप्लेव: गेनोया ही क्यों?

दोर्न: वहां सड़क की भीड़ बहुत कमाल की होती है। शाम को जब हम होटल से बाहर आते हैं तो सारी सड़क पर भीड़ की रेल-पेर नज़र आती है। इसी भीड़ के साथ निरुद्देश्य इधर-उधर आते-जाते हुए, टेढ़ी-तिरछी रेखाओं में घूमते हुए हम उसी के साथ जीते हैं, मानसिक रूप से उसी का अंग बन जाते हैं और इस बात पर विश्वास करने लगते हैं कि विश्वात्मा जैसी कोई चीज़ सम्भव है। कुछ वैसी ही जैसी कभी आपके नाटक में नीना ज़ारेच्नाया ने मंच पर प्रस्तुत की थी। अरे हां, इसी से मुझे याद आया कि ज़ारेच्नाया अब कहां है? वह कहां और कैसी है?

त्रेप्लेव: ठीक-ठाक होनी चाहिये।

दोर्न: मुझे बताया गया था कि वह मानो कुछ ख़ास तरह

की ज़िन्दगी बिता रही है। क्या मामला है?

त्रेप्लेव: यह लम्बी कहानी है, डाक्टर।

दोर्न: आप संक्षिप्त में बता दें।

(**ख़ामोशी**)

त्रेप्लेव: वह घर से भाग गयी और त्रिगोरिन के साथ रही। यह तो आपको मालूम ही है?

दोर्न: हां, मालूम है।

त्रेप्लेव: उसके बच्चा हुआ जो मर गया। वह त्रिगोरिन के मन से उतर गयी और, जैसी कि आशा करनी चाहिये थी, वह फिर से अपने पुराने अनुराग-जगत में वापस लौट गया। वैसे, उसने अपने पुराने सम्बन्धों से कभी नाता तोड़ा ही नहीं था और चारित्रिक ढुलमुलापन के अनुसार किसी तरह दोनों नावों पर सवार रहा था। अपनी जानकारी के आधार पर मैं जितना कुछ समझ पाया हूं, उससे यही नतीजा निकलता है कि नीना को व्यक्तिगत जीवन में तो कोई सफलता नहीं मिली।

दोर्न: और रंगमंच के जीवन में?

त्रेप्लेव: लगता है कि वहां हालत और भी ज़्यादा ख़राब है। मास्को के बाहर देहाती बंगलों के थियेटर में वह पहली बार स्टेज पर आयी और फिर छोटे नगरों और क़स्बों के थियेटरों में अभिनय करती रही। उन दिनों मैं उसकी पूरी खोज-ख़बर रखता था और कुछ अरसे तक तो यह भी करता रहा कि जहां वह जाती, वहीं पहुंच जाता। भूमिकायें वह बड़ी-बड़ी लेती, मगर अभिनय करती भोंडा, सुरुचि के बिना, चीख़-चिल्लाकर और भद्दे हाव-भाव दिखाते हुए। ऐसे क्षण भी होते जब वह प्रतिभापूर्ण ढंग से रोती-चीख़ती और मरने का अभिनय करती। किन्तु ऐसे तो इने-गिने क्षण ही होते थे।

दोर्न : इसका मतलब है कि उसमें प्रतिभा तो है ही ?

त्रेप्लेव : यह समझ पाना कठिन था। कहना चाहिये कि प्रतिभा है। मैं उसे देखता था, मगर वह मुझे देखना नहीं चाहती थी और नौकर-चाकर मुझे होटल के उसके कमरे में जाने नहीं देते थे। मैं उसके मन की हालत को समझता था और मिलने की ज़िद्द नहीं करता था।

(**खामोशी**)

और क्या बताऊं आपको ? बाद में, यहां लौट आने पर मुझे उसके पत्र मिलते रहे। बड़ी सूझ-बूझ के, स्नेहपूर्ण और दिलचस्प पत्र। वह किसी तरह की शिकायत नहीं करती थी, मगर मैं महसूस करता था कि बहुत ही क़िस्मत की मारी हुई है। उसकी एक-एक पंक्ति से उसकी दुखती, टीसती रग की अनुभूति होती थी। उसकी कल्पना भी मानो कुछ भटक गयी थी। पत्रों के नीचे वह गंगाचिल्ली ही लिखती। पुश्किन की 'जलपरी' काव्य-नाटिका में एक पात्र – चक्कीवाला – कहता रहता है कि वह कौआ है। इसी तरह वह अपने पत्रों में दोहराती रहती थी कि गंगाचिल्ली है। आजकल वह यहां है।

दोर्न : क्या मतलब, यहां है ?

त्रेप्लेव : शहर की सराय में। पांच दिन से वहां ठहरी हुई है। मैं भी वहां गया, मारीया इलीनीच्ना भी गयीं, मगर वह किसी से मिलना ही नहीं चाहती। सेम्योन सेम्योनोविच का कहना है कि उन्होंने मानो दोपहर के खाने के बाद कल उसे यहां से कोई डेढ़ मील दूर खेत में देखा था।

मेद्वेदेन्को : हां, मैंने देखा था। वह शहर की तरफ़ जा रही थी। मैंने नमस्कार किया और पूछा कि वह यहां हम लोगों

से मिलने क्यों नहीं आती। जवाब मिला कि आयेगी।

त्रेप्लेव : वह नहीं आयेगी।

(ख़ामोशी)

उसके पिता और सौतेली मां तो उसकी सूरत ही नहीं देखना चाहते। उन्होंने हर जगह पहरेदार बिठा दिये हैं ताकि वह घर के पास तक न फटक सके। **(डाक्टर के साथ लिखने की मेज़ पर जाता है)** डाक्टर साहब, काग़ज़ों पर फ़लसफ़े के घोड़े दौड़ाना कितना आसान है, मगर वास्तविक जीवन में कितना मुश्किल !

सोरिन : बड़ी प्यारी लड़की थी।

दोर्न : क्य-ा ?

सोरिन : मैंने कहा कि बड़ी प्यारी लड़की थी। काउंसिलर आफ़ स्टेट, ख़ुद सोरिन भी कुछ अरसे तक उसका प्रेम-दीवाना बना रहा।

दोर्न : बुढ़ापे में भी औरतों की चाट नहीं गयी।

(शाम्रायेव की हंसी सुनायी देती है)

पोलीना अन्द्रेयेव्ना : लगता है कि हमारे लोग स्टेशन से आ गये ...

त्रेप्लेव : हां, मुझे अम्मां की आवाज़ सुनाई दे रही है।

(अर्कादिना, त्रिगोरिन और इनके पीछे शाम्रायेव आते हैं)

शाम्रायेव (भीतर आते हुए) : हम लोगों पर तो प्रकृति अपना रंग दिखा रही है, हम बुढ़ाते जा रहे हैं, लेकिन, अतीव आदरणीया, आप तो पहले की तरह ही जवान बनी हुई हैं ...

वही हल्के रंग का ब्लाउज़, वही सजीवता... वही सजीलापन...

अर्कादिना : आप फिर से मुझे नज़र लगाना चाहते हैं, बुरे आदमी ?

त्रिगोरिन (सोरिन से) : नमस्ते, प्योत्र निकोलायेविच! यह भी कोई बात हुई कि आप लगातार बीमार होते रहते हैं? यह तो अच्छा नहीं! **(माशा को देखकर, ख़ुशी से)** अरे, आप हैं मारीया इल्यीनिच्ना!

माशा : मुझे पहचान लिया? **(हाथ मिलाती है)**

त्रिगोरिन : शादी हो गयी ?

माशा : कभी की।

त्रिगोरिन : ख़ुश हैं न? **(दोर्न और मेद्वेदेन्को का अभिवादन करता है, इसके बाद कुछ झिझकते हुए त्रेप्लेव के पास जाता है)** इरीना निकोलायेव्ना का कहना है कि आप बीती बातों को भूल गये हैं और अब मुझसे नाराज़ नहीं हैं।

(त्रेप्लेव हाथ मिलाता है)

अर्कादिना (बेटे से) : यह लो, बोरीस अलेक्सेयेविच वह पत्रिका लाये हैं जिसमें तुम्हारी नयी कहानी छपी है।

त्रेप्लेव (पत्रिका लेते हुए त्रिगोरिन से) : बहुत धन्यवाद देता हूं आपको। बड़ी कृपा की आपने।

(बैठते हैं)

•

त्रिगोरिन : आपके श्रद्धालुओं-प्रशंसकों ने आपको नमस्कार कहने का अनुरोध किया है। पीटर्सबर्ग और मास्को में आपमें बड़ी दिलचस्पी ली जा रही है और मुझसे लगातार आपके बारे में पूछ-ताछ की जाती है। लोग यह जानना चाहते हैं कि

आप कैसे हैं, कितनी उम्र है आपकी, आप श्यामकेशी हैं या स्वर्णकेशी। न जाने क्यों, सभी यह सोचते हैं कि आप जवान नहीं हैं। आपका असली नाम भी किसी को मालूम नहीं, क्योंकि आप उपनाम से अपनी रचनायें छपवाते हैं। आप तो "लोहे की नक़ाब"* की तरह रहस्यमय हैं।

त्रेप्लेव : कुछ दिन तो रहेंगे न?

त्रिगोरिन : नहीं, कल ही मास्को जाने की सोच रहा हूं। जाना ही चाहिये। अपना उपन्यास ख़त्म करने की उतावली में हूं। उसके बाद कोई संकलन निकालने की भी बात है। थोड़े में यह कि वही पुराना क़िस्सा है।

(जब तक इनकी बातचीत चलती है, अर्कादिना और पोलीना अन्द्रेयेव्ना ताश खेलने की मेज़ कमरे के बीचोंबीच रखकर उसे खोलती हैं। शाम्रायेव मोमबत्तियां जलाता है और कुर्सियां रखता है। अलमारी से लाटो निकाला जाता है)

मौसम तो मेरे आने पर कुछ अच्छा रंग नहीं दिखा रहा। बड़ी तेज़ हवा है। अगर वह शान्त हो गयी तो मछलियां पकड़ने के लिये कल सुबह झील पर जाऊंगा। मुझे बाग़ और वह जगह भी देखनी चाहिये, जहां–याद है न?–आपका नाटक खेला गया था। मेरे दिमाग़ में एक कथानक बन चुका है। बस, उस जगह को स्मृति-पटल पर फिर से ताज़ा कर लेना चाहिये जहां घटनायें घटती हैं।

माशा (अपने पिता से) : पापा, मेरे पति को बग्घी ले जाने दीजिये न! उसे घर जाना है।

---

* फ़्रांस में बस्तीलिया क़िले का रहस्यमय क़ैदी (१७–१८ वीं शताब्दी)। शायद वह लुडविक १४ वें का बड़ा भाई था। – अनु०

शाम्रायेव (चिढ़ाते हुए) : बग्घी ... घर जाना है ... **(कड़ाई से)** क्या देखा नहीं – बग्घी अभी स्टेशन से वापस आयी है। घोड़ों को फिर से तो नहीं दौड़ाया जा सकता।

माशा : लेकिन दूसरे घोड़े भी तो हैं ... **(पिता को चुप देखकर माशा हाथ झटकती है)** आपसे कोई उम्मीद करना ...

मेद्वेदेन्को : मैं पैदल चला जाता हूं, माशा। सच ...

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (आह भरकर) : ऐसे मौसम में पैदल ... **(ताश खेलने की मेज़ के गिर्द बैठती है)** महानुभावो, पधारें।

मेद्वेदेन्को : सिर्फ़ चार मील ही तो है ... विदा ... **(बीवी का हाथ चूमता है)** विदा, अम्मां जी ...

(सास मन मारकर अपना हाथ उसकी ओर चूमने के लिये बढ़ाती है)

मैंने तो किसी को भी परेशान न किया होता, बच्चे का सवाल है ... **(सबको सिर झुकाता है)** नमस्ते ... **(जाता है, चाल ऐसी है मानो किसी बात के लिये अपराधी हो)**

शाम्रायेव : कोई बात नहीं, पैदल ही पहुंच जायेगा। कोई लाट साहब तो है नहीं।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (मेज़ को थपथपाती है) : पधारिये महानुभावो। हम वक़्त बरबाद नहीं करेंगे, जल्द ही हमें खाने के लिये बुला लिया जायेगा।

(शाम्रायेव, माशा और दोर्न मेज़ के गिर्द बैठते हैं)

अर्कादिना (त्रिगोरिन से) : जब पतझर की लम्बी रातें आती हैं तो यहां लाटो खेला जाता है। देखिये – कितना पुराना लाटो है। हमारी दिवंगता मां इसी लाटो से हमारे साथ तब खेला करती थीं, जब हम बच्चे ही थे। भोजन से पहले क्या

हमारे साथ एक बाज़ी खेलना पसन्द नहीं करेंगे? (**त्रिगोरिन के साथ मेज़ के गिर्द बैठता है**) खेल है तो नीरस, लेकिन अगर हम इसके आदी हो जायें तो फिर ऊब महसूस नहीं होती। (**सभी को तीन-तीन पत्ते देती है**)

त्रेप्लेव (**पत्रिका के पन्ने उलटते हुए**): अपनी कहानी तो पढ़ ली, मगर मेरी कहानी के पृष्ठ तक अलग नहीं किये। (**पत्रिका को लिखने की मेज़ पर रखकर बायें दरवाज़े की तरफ़ जाता है। मां के पास से गुज़रते हुए उसका सिर चूमता है**)

अर्कादिना: क्या तुम नहीं खेलोगे, कोस्त्या?

त्रेप्लेव: क्षमा चाहता हूं, कुछ मन नहीं हो रहा!... मैं ज़रा घूम आता हूं। (**जाता है**)

अर्कादिना: दांव दस कोपेक रहेगा। मेरी ओर से दस कोपेक रख दीजिये, डाक्टर।

दोर्न: अभी लीजिये।

माशा: सभी ने पैसे रख दिये? तो मैं शुरू करती हूं। बाईस!

अर्कादिना: ठीक है।

माशा: तीन!..

दोर्न: अ-च्छा!

माशा: तीन चला? आठ! इक्यासी! दस!

शाम्रायेव: जल्दी नहीं करो!

अर्कादिना: खार्कोव नगर में मेरा कितना भव्य स्वागत-सत्कार किया गया! हे भगवान! अभी तक खुशी से सिर चकरा रहा है!

माशा: चौंतीस!

(**मंच के पीछे वाल्ज़ की दर्दभरी धुन बजती है**)

अर्कादिना: विद्यार्थियों ने खूब तालियां बजायीं और वाह,

वाह की ... फूलों की तीन डलियां, दो पुष्प-चक्र और यह भेंट किया ... **(छाती पर से ब्रोच उतारकर मेज़ पर फेंकती है)**

शाम्रायेव : हां, यह हुई न बढ़िया चीज़ ...

माशा : पचास ! ..

दोर्न : पूरे पचास ?

अर्कादिना : अद्भुत पोशाक पहने थी मैं ... और कुछ हो न हो, मगर पहने-ओढ़ने का सलीक़ा मुझे आता है।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना: कोस्त्या बजा रहा है यह धुन। बेचारे का मन उदास है।

शाम्रायेव : अख़बारों में भी बहुत छीछालेदर हुई है उसकी।

माशा : सतहत्तर !

अर्कादिना : उसे अख़बारों की तरफ़ ध्यान ही नहीं देना चाहिये।

त्रिगोरिन : क़िस्मत उसका साथ नहीं दे रही। वह किसी तरह भी अपने असली रंग में नहीं आ रहा। कुछ अजीब, अस्पष्ट और कभी-कभी तो प्रलाप जैसा कुछ होता है उसकी रचनाओं में। एक भी जीता-जागता पात्र नहीं मिलता।

माशा : ग्यारह !

अर्कादिना (मुड़कर सोरिन की तरफ़ देखती है) : पेत्रूशा, ऊब महसूस कर रहे हो क्या ?

(ख़ामोशी)

सो रहा है।

दोर्न : काउंसिलर आफ़ स्टेट सो रहा है।

माशा : सात ! नब्बे !

त्रिगोरिन : अगर मैं झील के किनारे ऐसे घर में रहता होता तो क्या कुछ लिखता ? मैं अपनी ऐसी इच्छा को दबा लेता और मछली पकड़ने के सिवा कुछ न करता।

माशा : अट्ठाइस !

त्रिगोरिन : झींगा या कोई ऐसी ही दूसरी मछली पकड़कर तो मज़ा ही आ जाता है !

दोर्न : मैं तो कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच की प्रतिभा में विश्वास करता हूं। उसमें कुछ है ! कुछ तो है ! वह प्रतिमाओं के माध्यम से कल्पना करता है, उसकी कहानियां बड़ी रंगारंग होती हैं, बहुत सजीव और मेरे मन पर गहरी छाप छोड़ती हैं। दुख की बात सिर्फ़ इतनी है कि कोई निश्चित लक्ष्य नहीं है उसके सामने। वह मन को छूता है, मगर इससे अधिक कुछ नहीं। मन को छूने से ही तो बहुत दूर नहीं जा सकता लेखक। इरीना निकोलायेव्ना, आप खुश हैं कि आपका बेटा लेखक है ?

अर्कादिना : आप कल्पना कीजिये, मैंने अभी तक उसकी एक भी रचना नहीं पढ़ी। फ़ुरसत ही नहीं मिलती।

माशा : छब्बीस !

(त्रेप्लेव धीरे से आकर सीधा अपनी मेज़ की तरफ़ जाता है)

शाम्रायेव (त्रिगोरिन से) : बोरीस अलेक्सेयेविच, हमारे यहां आपकी एक चीज़ है।

त्रिगोरिन : कौन-सी चीज़ ?

शाम्रायेव : कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच ने एक दिन गंगाचिल्ली का शिकार किया था और आपने मुझसे कहा था कि मैं उसमें भुस भरवा दूं।

त्रिगोरिन : याद नहीं। **(सोचता है)** मुझे याद नहीं !

माशा : छियासठ ! एक !

त्रेप्लेव (ज़ोर से खिड़की खोलकर बाहर की सुन-गुन लेता है):

कैसा घुप्प अन्धेरा है! समझ में नहीं आ रहा कि मेरा मन क्यों ऐसे बेचैन है।

अर्कादिना : कोस्त्या, खिड़की बन्द कर दो, ज़ोर से हवा आ रही है।

(त्रेप्लेव खिड़की बन्द कर देता है)

माशा : अट्ठासी !

त्रिगोरिन : महानुभावो, बाज़ी मेरे हाथ है।

अर्कादिना (ख़ुशी से) : वाह ! वाह !

शाम्रायेव : वाह !

अर्कादिना : यह आदमी तो तक़दीर का सिकन्दर है ! **(उठती है)** आइये, अब चलकर कुछ खायें-पियें। हमारी इस नामी हस्ती ने आज भोजन नहीं किया। रात का खाना ख़त्म करके हम फिर खेल जारी रखेंगे। **(बेटे से)** कोस्त्या, अपनी इस पाण्डुलिपि को छोड़ो, खाना खाने चलो।

त्रेप्लेव : मन नहीं चाहता, अम्मां। भूख नहीं है।

अर्कादिना : जैसी तुम्हारी मर्ज़ी। **(सोरिन को जगाती है)** पेत्रूशा, खाने का वक़्त हो गया ! **(शाम्रायेव की बांह थाम लेती है)** मैं आपको बताऊंगी कि ख़ार्कोव में मेरा कैसा भव्य स्वागत-सत्कार हुआ ...

(पोलीना अन्द्रेयेव्ना मेज़ पर मोमबत्तियां बुझा देती है। इसके बाद वह और दोर्न पहियोंवाली कुर्सी को ठेलते ले चलते हैं। सभी बायें दरवाज़े से बाहर जाते हैं। लिखने की मेज़ के सामने बैठा हुआ त्रेप्लेव ही मंच पर रह जाता है)

त्रेप्लेव (लिखने को तैयार होता है, पहले से लिखे हुए पर

नज़र दौड़ाता है) : मैंने नये कला-रूपों की कितनी अधिक चर्चा की है, लेकिन अब यह अनुभव करता हूं कि ख़ुद भी धीरे-धीरे एक ही ढर्रे में बंधता चला जा रहा हूं। (**पढ़ता है**) "बाड़ पर लगा इश्तिहार पुकार-पुकारकर कह रहा था ... काले बालों के चौखटे में जड़ा पीला चेहरा ..." पुकार-पुकारकर कह रहा था, चौखटे में जड़ा चेहरा ... यह बकवास है। (**काट देता है**) मैं यहां से शुरू करूंगा कि बारिश के शोर से नायक की आंख खुल गयी और बाक़ी सब काट दूंगा। चांदनी रात का वर्णन बहुत लम्बा और आवश्यकता से अधिक सुन्दर है। त्रिगोरिन ने तो अपने लिखने के लिये कुछ विशेष गुर बना लिये हैं, उसका काम आसान है ... उसके यहां तो टूटी हुई बोतल की चमकती गर्दन और पनचक्की के पहिये की काली परछाईं से चांदनी रात का चित्र पूरा हो जाता है। लेकिन मेरे यहां है स्पन्दित प्रकाश, सितारों की हल्की झिलमिल और हवा की धीमी-धीमी सुगन्ध में डूबती दूरी पर बजते पियानो की ध्वनियां ... यह सब यातनाप्रद है।

(**ख़ामोशी**)

हां, मुझे इस बात का अधिकाधिक विश्वास होता जा रहा है कि बात नये और पुराने कला-रूपों की नहीं, बल्कि यह है कि आदमी किन्हीं भी रूपों की चिन्ता किये बिना लिखता जाता है, इसलिये लिखता जाता है कि एक मुक्त प्रवाह की तरह वह उसकी आत्मा की गहराई से उमड़ता आता है।

(**त्रेप्लेव की मेज़ के पासवाली खिड़की पर कोई दस्तक देता है**)

यह कौन खिड़की पर दस्तक दे रहा है? (**खिड़की में से नज़र**

दौड़ाता है) कोई भी तो नज़र नहीं आ रहा... (**शीशे का दरवाज़ा खोलकर बाग़ में देखता है**) कोई भागकर नीचे गया है। (**पुकारता है**) कौन है?

(बाहर जाता है – बरामदे में तेज़ क़दमों की आवाज़ सुनाई देती रहती है। आधे मिनट बाद वह नीना ज़ारेच्नाया को साथ लिये हुए लौटता है)

नीना! नीना!

(नीना उसकी छाती पर अपना सिर रखकर धीरे-धीरे सिसकती है)

(**विह्वल होकर**) : नीना! नीना! यह आप हैं... आप... मेरा मन पहले ही यह जानता था, दिन भर मेरी आत्मा बहुत व्याकुल रही है। (**नीना की टोपी और लबादा उतारता है**) ओह, मेरी अच्छी, मेरी प्यारी, प्यारी नीना आ गयी! नहीं, ये आंसू नहीं बहाओ, नहीं।

नीना : यहां कोई है?

त्रेप्लेव : कोई नहीं।

नीना : दरवाज़े बन्द कर दीजिये वरना कोई आ जायेगा।

त्रेप्लेव : कोई नहीं आयेगा।

नीना : मुझे मालूम है कि इरीना निकोलायेव्ना यहां हैं। दरवाज़े बन्द कर दीजिये...

त्रेप्लेव (दायीं ओर के दरवाज़े को ताले से बन्द कर देता है, बायें दरवाज़े की तरफ़ आता है) : इसमें तो ताला ही नहीं है। मैं इसके सामने कुर्सी रख देता हूं। (**दरवाज़े के सामने**

कुर्सी अड़ा देता है) डरिये नहीं, कोई नहीं आयेगा।

नीना (त्रेप्लेव के चेहरे को एकटक देखती रहती है) : मुझे अपने चेहरे को अच्छी तरह से देख लेने दीजिये। (**इधर-उधर नज़र दौड़ाती है)** यहां गर्माहट हैं, अच्छा लग रहा है... यह तो तब दीवानख़ाना था। मैं क्या बहुत बदल गयी हूं ?

त्रेप्लेव : हां... आप दुबला गयी हैं और आपकी आंखें बड़ी बड़ी हो गयी हैं। नीना, यह अजीब बात है कि मैं आपको देख रहा हूं। आपने मुझे अपने पास क्यों नहीं आने दिया ? अब तक यहां क्यों नहीं आयीं ? मुझे मालूम है कि लगभग एक सप्ताह से आप यहां हैं... मैं हर दिन कई-कई बार आपके यहां जाता था, भिखारी की तरह आपकी खिड़की के नीचे खड़ा रहता था।

नीना : मेरे दिल में यह डर बैठा हुआ था कि आप मुझसे नफ़रत करते हैं। हर रात मुझे यह सपना आता है कि आप मुझे देखते रहते हैं और पहचानते नहीं। काश, आपको मालूम होता ! मैं जब से आई हूं, यहीं, झील के पास ही चक्कर काटती रहती हूं। अनेक बार आपके घर के पास तक आई, मगर भीतर क़दम रखने की हिम्मत नहीं कर पायी। आइये, बैठ जायें।

(बैठते हैं)

बैठकर बातें करेंगे, बहुत बातें करेंगे। यहां गर्माहट है, बहुत अच्छा है... हवा का शोर – सुन रहे हैं न ? तुर्गेनिव ने एक जगह पर लिखा है : "वह ख़ुशक़िस्मत है जिसके सिर पर ऐसे मौसम में छत है, जिसका अपना गर्म कोना है"। मैं – गंगा-चिल्ली हूं... नहीं, मैं यह नहीं कहना चाहती थी। (**माथे**

को हाथ से रगड़ती है) ओह, मैं क्या कह रही थी? हां, याद आया ... तुर्गेनेव के शब्द दोहरा रही थी ... "और भगवान मदद करे सभी बेघर-बार भटकनेवालों की ..." ख़ैर कोई बात नहीं। (**सिसकती है**)

त्रेप्लेव : नीना, आप फिर से रोने लगीं ... नीना!

नीना : कोई बात नहीं, इससे मेरा मन हल्का हो रहा है ... दो साल से मैं रोयी नहीं हूं। कल शाम को अंधेरा गहरा जाने पर मैं यह देखने को बाग़ में गयी कि हमारा थियेटर क़ायम है या नहीं। वह अभी तक वहां सही-सलामत है। दो सालों के बाद मैं पहली बार रो पड़ी, मेरे दिल का बोझ हल्का हो गया, मन को चैन मिला। देखते हैं, मैं अब रो नहीं रही। (**उसका हाथ अपने हाथ में ले लेती है**) तो आप लेखक बन गये ... आप लेखक, मैं – अभिनेत्री ... हम दोनों ही भंवर में पड़ गये ... मैं बच्ची की तरह हंसी-ख़ुशी की ज़िन्दगी बिताती थी – सुबह आंख खुलती और गाने लगती। आपको प्यार करती थी, ख़्याति के सपने देखती थी और अब? कल तड़के ही तीसरे दर्जे के डिब्बे में, किसानों-देहकानों के साथ बैठकर मुझे येलेत्स नगर जाना है। वहां वे "सुशिक्षित" व्यापारी अपनी मेहरबानियों से मेरे नाक में दम कर देंगे। बड़ी भोंड़ी ज़िन्दगी है!

त्रेप्लेव : येलेत्स किसलिये जा रही हैं?

नीना : जाड़े भर के लिये वहां अभिनय करने का अनुबन्ध कर चुकी हूं। अब जाने वक़्त हो गया।

त्रेप्लेव : नीना, मैंने आप पर लानत भेजी, आपसे नफ़रत की, आपके पत्रों और फ़ोटुओं को फाड़ फेंका, लेकिन हर क्षण यह अनुभव करता रहा कि मैं अपना दिल सदा-सदा के लिये आपको दे चुका हूं। आपको अपने मन से निकाल दूं, यह मेरे बस की बात नहीं, नीना। जब से मैंने आपको खोया और लिखने

लगा, ज़िन्दगी एक असह्य बोझ बन गयी है, मैं निरन्तर यातना सहता हूं... मेरी जवानी तो अचानक कहीं हवा हो गयी और मुझे ऐसा लगता है मानो नब्बे साल हो गये मुझे इस धरती पर सांस लेते। मैं आपको पुकारता रहता हूं, उस धरती को चूमता हूं जिस पर कभी आप चलती रही थीं। मैं जिधर भी देखता हूं, हर जगह आप ही का चेहरा मेरे सामने रहता है, आपकी यह प्यारी मुस्कान ही नज़र आती है जो मेरे जीवन के सबसे अच्छे वर्षों को आलोकित करती रही है...

नीना (चकरायी-सी) : वह किसलिये यह सब कह रहा है, किसलिये यह सब कह रहा है?

त्रेप्लेव : मैं एकाकी हूं, किसी के भी प्यार की गर्माहट मुझे नहीं मिली, मुझे तहख़ाने की तरह ठण्ड महसूस होती है। मैं जो कुछ भी लिखता हूं, वह नीरस, रूखा-रूखा और बुझा-बुझा होता है। यहीं रह जाइये, नीना, आपकी मिन्नत करता हूं, या फिर मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दीजिये!

(नीना जल्दी से अपनी टोपी और लबादा पहनती है)

नीना, किसलिये आप ऐसा कर रही हैं? भगवान के लिये, नीना... **(उसे टोपी और लबादा पहनते हुए देखता रहता है)**

(ख़ामोशी)

नीना : मेरी बग्घी फाटक के पास खड़ी है। मुझे छोड़ने नहीं जाइये, मैं ख़ुद ही चली जाऊंगी... **(रोते हुए)** पानी दीजिये...

त्रेप्लेव (पानी देता है) : आप अब कहां जायेंगी?

नीना : शहर।

इरीना निकोलायेव्ना यहीं हैं?

त्रेप्लेव: हां ... बृहस्पति को मामा जी की तबीयत बहुत ज़्यादा ख़राब हो गयी थी। हमने तार देकर उन्हें बुला लिया था।

नीना: किसलिये आपने यह कहा कि उस धरती को चूम लिया जहां कभी मैं चलती रही थी? काश, कोई मुझे मार डालता। **(मेज़ पर झुकती है)** कितनी थक गयी हूं मैं! थोड़ा आराम कर पाती ... कुछ आराम कर पाती! **(सिर ऊपर उठाती है)** मैं – गंगाचिल्ली हूं ... नहीं, यह नहीं। मैं – अभिनेत्री हूं। अरे, हां! **(अर्कादिना और त्रिगोरिन की हंसी की आवाज़ सुनकर ध्यान से उसे सुनती रहती है और फिर भागकर बायें दरवाज़े के पास जाती है और चाबी के सूराख़ में से देखती है)** और वह भी यहां है ... **(त्रेप्लेव के पास लौटकर)** अरे, हां ... कोई बात नहीं ... हां ... थियेटर में उसकी कोई आस्था नहीं थी, लगातार मेरे सपनों की खिल्ली उड़ाता रहता था, धीरे-धीरे मेरी अपनी आस्था भी जाती रही और उत्साह जवाब दे गया ... फिर प्यार की परेशानियां, ईर्ष्या की आग, चौबीसों घण्टे बना रहनेवाला बच्चे का भय ... मैं ओछी और तुच्छ हो गयी थी, बेतुका अभिनय करती थी ... समझ नहीं पाती थी कि हाथों का क्या करूं, मंच पर ढंग से खड़ी नहीं रह पाती थी, आवाज़ पर मेरा वश नहीं रहता था। जब स्वयं को यह अनुभव होता रहे हो कि बहुत भोंड़ा अभिनय हो रहा है, तब कैसा लगता है, आप मन की उस स्थिति को नहीं समझ सकते। मैं – गंगाचिल्ली हूं। नहीं, यह नहीं ... आपको याद है न कि आपने एक गंगाचिल्ली का शिकार किया था? संयोग से कोई

आदमी आया, उसने गंगाचिल्ली को देखा और अपनी ऊब मिटाने के लिये उसकी हत्या कर डाली ... एक छोटी-सी कहानी का कथानक ... नहीं, मैं यह नहीं कहना चाहती थी। (**माथे को रगड़ती है**) ओह क्या कह रही थी मैं? हां, मैं रंगमंच की चर्चा कर रही थी। अब मेरे साथ ऐसी बात नहीं है ... मैं अब असली अभिनेत्री हूं, मैं बड़ा रस लेती हुई, बहुत उल्लास से अभिनय करती हूं, मंच पर नशा-सा अनुभव करती हूं, अपने को बहुत रंग में महसूस करती हूं। लेकिन अभी, जब तक यहां हूं, पैदल घूमा करती हूं, घूमती और सोचती हूं, सोचती और महसूस करती हूं कि कैसे दिन-प्रति-दिन मेरी मानसिक शक्ति बढ़ती जा रही है ... कोस्त्या, मैं अब यह जानती हूं, यह समझती हूं कि हमारे काम में – चाहे हम अभिनय करें या लिखें – मुख्य चीज़ ख्याति और चमक-दमक नहीं है, वह नहीं जिसके मैं सपने देखा करती थी। मुख्य चीज़ है – धीरज बनाये रखना। दुःख-दर्द सहो और अपने पर विश्वास करो। मैं विश्वास करती हूं और मुझे इतना कष्ट नहीं होता है। जब मैं अपने इस पेशे के बारे में सोचती हूं तो मुझे ज़िन्दगी से दहशत नहीं होती।

त्रेप्लेव (**दुखी होते हुए**): आपने अपना रास्ता खोज लिया, आप जानती हैं कि किस दिशा में जा रही हैं, लेकिन मैं अभी भी सपनों और प्रतिमाओं की भूल-भुलैया में भटक रहा हूं और नहीं जानता कि किसलिये और किसे इसकी ज़रूरत है। मैं नहीं जानता कि मेरा पेशा क्या है और न ही मुझे उसमें कोई विश्वास है।

नीना (**कान लगाकर सुनते हुए**): शी ... मैं जाती हूं। अलविदा। जब मैं बड़ी अभिनेत्री बन जाऊंगी, तब मुझसे मिलने आइयेगा। वादा करते हैं ऐसा करने का? और अब ... (**उसका हाथ दबाती है**) बहुत देर हो चुकी है। बड़ी मुश्किल से खड़ी

रह पा रही हूं... थककर चूर हो गयी हूं, भूख भी लगी है।

त्रेप्लेव : रुक जाइये, मैं आपके लिये खाने को कुछ लाता हूं...

नीना : नहीं, नहीं... मुझे छोड़ने के लिये मेरे साथ नहीं चलिये, मैं ख़ुद ही चली जाऊंगी... मेरी बग्घी निकट ही है... तो वह उसे अपने साथ ले आयीं? ख़ैर, सब ठीक है। त्रिगोरिन से मिलने पर उससे किसी भी तरह की चर्चा नहीं कीजियेगा... मैं उसे प्यार करती हूं, पहले से भी ज़्यादा प्यार करती हूं... छोटी-सी कहानी का कथानक... प्यार करती हूं, बेहद प्यार करती हूं, पागलपन की हद तक प्यार करती हूं। पहले कहीं अच्छी ज़िन्दगी थी, कोस्त्या! याद है न? कैसी स्पष्ट, स्नेहपूर्ण, ख़ुशीभरी, स्वच्छ-निर्मल ज़िन्दगी थी, कैसी भावनायें थीं, कोमल, सजीले फूलों जैसी भावनायें... याद है न?... **(दोहराती है)** "लोग, बबर, उक़ाब और तीतर, बारहसिंघे, बत्तखें, मकड़े-मकड़ियां, पानी में रहनेवाली मूक मीन, समुद्री तारक मछलियां और आंखों से नज़र न आनेवाले सूक्ष्म जीव-जन्तु – संक्षेप में यह कि सभी प्राणी, सभी जीवधारी, सभी जीवित प्राणी, अपना दुखद जीवन-चक्र पूरा करके लुप्त हो चुके हैं... हज़ारों सालों से धरती पर एक भी जीवित प्राणी नहीं है और यह बेचारा चांद व्यर्थ ही अपना नभ-दीप जलाता रहता है। चरागाह में चीख़कर सारस नहीं जागते हैं और लाइम वृक्षों के कुंजों में मई महीने के गुबरैलों की भनक सुनाई नहीं देती है..." **(त्रेप्लेव का ज़ोर से आलिंगन करके शीशे के दरवाज़े से बाहर भाग जाती है)**

त्रेप्लेव (कुछ रुककर) : अगर कोई बाग़ में इसे देख लेगा और बाद में अम्मां को बतायेगा तो यह अच्छा नहीं होगा। अम्मां के दिल को इससे ठेस लग सकती है...

(दो मिनट तक वह चुपचाप अपनी सभी पाण्डुलिपियां फाड़कर मेज़ के नीचे फेंकता रहता है और इसके बाद दायीं ओर का दरवाज़ा खोलकर बाहर चला जाता है)

दोर्न (बायीं ओर का दरवाज़ा खोलने का यत्न करते हुए) : अजीब मामला है। दरवाज़ा तो जैसे बन्द है ... **(भीतर आकर कुर्सी को उसकी जगह पर रखता है)** यह तो बाधा-घुड़दौड़ हो गयी।

(अर्कादिना और पोलीना अन्द्रेयेव्ना आती हैं और उनके पीछे बोतलें लिये हुए याकोव तथा माशा आते हैं और फिर शाम्रायेव तथा त्रिगोरिन)

अर्कादिना : लाल शराब और बियर को बोरीस अलेक्सेयेविच के लिये यहां मेज़ पर रख दीजिये। हम लाटो खेलते हुए पीते भी जायेंगे। तो आइये, बैठिये, महानुभावो।

पोलीना अन्द्रेयेव्ना (याकोव से) : चाय भी अभी ले आओ। **(मोमबत्तियां जलाती है और ताश खेलने की मेज़ के पास बैठती है)**

शाम्रायेव (त्रिगोरिन को अलमारी के पास ले जाता है) : यह है वह चीज़ जिसका मैंने आपसे आज ज़िक्र किया था ... **(अलमारी से भुस भरी हुई गंगाचिल्ली निकालता है)** आपने ही इसकी फ़रमाईश की थी।

त्रिगोरिन (गंगाचिल्ली की ओर देखते हुए) : याद नहीं ! **(सोचने के बाद)** बिल्कुल याद नहीं !

(मंच के पीछे दायीं ओर से गोली चलने की आवाज़ सुनाई देती है। सभी चौंक उठते हैं)

अर्कादिना (डरकर) : यह धमाका कैसा हुआ ?

दोर्न : कुछ नहीं। शायद मेरे दवाइयों के बक्से में कोई शीशी फट गयी है। आप कोई चिन्ता न करें। **(दायीं ओर के दरवाज़े से बाहर जाता है और आधे मिनट बाद वापस आता है)** वही हुआ है, ईथर की शीशी फट गयी है। **(गुनगुनाता है)** "मैं तो फिर से मुग्ध खड़ा हूं, तेरे सामने ..."

अकार्दिना (मेज़ के पास बैठते हुए) : छि, मैं तो डर गयी थी। इसने मुझे उस दिन की याद दिला दी, जब ... **(चेहरे को हाथों से छिपा लेती है)** आंखों के सामने अन्धेरा भी छा गया ...

दोर्न (पत्रिका के पृष्ठ उलटते हुए त्रिगोरिन से) : दो महीने पहले इसी पत्रिका में एक लेख छिपा था ... अमरीका का पत्र, और इस सिलसिले में मैं आपसे पूछना चाहता था कि ... **(त्रिगोरिन की कमर में बांह डालकर उसे स्टेज की फुट लाइटों की ओर ले जाता है)** ... चूंकि मुझे इस मामले में बहुत दिलचस्पी है ... **(धीमी, दबी आवाज़ में)** इरीना निकोलायेव्ना को यहां से हटा ले जाइये। बात यह है कि कोन्स्तान्तीन गव्रीलोविच ने अपने को गोली मार ली है ...

(परदा गिरता है)